कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष:16, अंक:11 अगस्त 2017

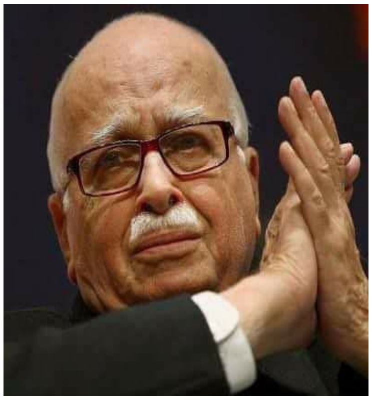

भारत के पितृपुरुषों का एकांत

क्या टुकड़ों में बटेगा पाकिस्तान

इस अंक में......

- पत्थर का मतलब भगवान होता है,
- रक्षाबन्धन-श्रीमती सुधा तिवारी
- सोच और नजरिया बदलिए नजारे तो स्वतः बदल जाएंगे-आशा त्रिपाठी
- बचे परिवर्तन के दंभ से-संतोष गौड़ 'राष्ट्रप्रेमी'
- सुखी रहने का तरीका-सत्यव्रत मिश्रा
- प्रभु की प्राप्ति किसे होती है

स्थायी स्तम्भ

प्रेरक प्रसंग, अपनी बातः आयोजनों में बुके नहीं बुक्स दें, भाई-बहन का रक्षासूत्र 'बंधन', उपयोगी जानकारीः अगर रेल यात्रा में आपका सामान चोरी हो जाए, तो..?-कुलभुषण शुक्ला, हिन्दीतर भाषी रचनाकार-ऊँ नमः शिवाय-विजय कुमार सम्पत्ति, ये आग कब बूझेगी, कविताए/गीत/ग़ज़लः कर्ज़ माफी का मर्ज़, कर्ज़ माफ की होड़-आचार्य शिव प्रसाद सिंह राजभर, जमकर बरसो बादल-गोपाल कौशल, मानव का आततायीपन-डॉ० अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, बहुत कुछ बाकी है-डॉ० आशा रानी, तेवरी-रमेश राज, साहित्य समाचार, धारावाहिक उपन्यासः निर्भया-अंकिता साहू, लघु कथाएंः केले के छिलके-आचार्य शिव प्रसाद सिंह राजभर, अबार्शन-मुकेश ऋषि वर्मा, पुरस्कार सूचना

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया
विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

तितली कभी इस पुष्प में कभी उस पुष्प से बातें कर फिर उड़कर तीसरे पुष्प से क्या गुप्त मन्त्रणा करती फिरती है? यही न कि फूलों की बगिया में अपना प्रेमी ढूंढती फिरती है. तेरी सुन्दर काया से तो सभी प्रेम करेगें ही, अपनी सांसो की धड़कन के सरगम पर मिटने वाले प्रेमी को ढूंढ!

तितली! तू कितने फूलों से प्यार करना चाहती है? मन, इच्छाओं की लिप्साओ का कभी कोई अन्त नहीं हैं. भला! इनकी भूख को कौन मिटा सका है. क्या तू भी इसी राह पर चल रही है? धिक! पिपासा तेरी भी कहीं तृप्ति नहीं है.

त्रेता युग गिद्धराज के वशंज, रुप परिवर्तन ने तुम्हें भी परिवर्तित कर दिया है? एक अबला की रक्षा में प्राणों की आहुत देने वाले शिरोमणि! क्या उसकी पुरातन याद अब भूल गए? अहंकारी, अनीति गामी रावल के गर्व को ललकाने वाले वीर! युग ने तुम्हें अन्धा कर दिया है? यदि नहीं तो फिर मौन क्यों हो? 'अत्याचारी का विनाश तो होता ही है पर साधुता कब तक धारण किए रहोगें.

आदाब अर्ज़ है

अपनी बात

आयोजनों में बुके नहीं बुक्स दें

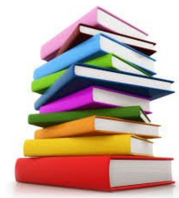

ये सब हुआ पुस्तकों से दूर होने के कारण. लोगों की पुस्तकों के पठन-पाठन में रुचि नगण्य सी हो गयी है. पुस्तके वास्तविक धरातल पर दिल से दिल का रिश्ता जोड़ती है. जिस भी व्यक्ति को पुस्तकों से प्यार है वह अपनों से वंचित नहीं हो सकता. शायद पुस्तकों की इसी महत्ता को समझते हुए हमारे प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी के कहने पर गृह मंत्रालय, भारत सरकार के माध्यम से सभी राज्यों को यह निर्देश भेजवाया गया कि **'मेरे स्वागत के लिए बुके(फूलों का गुच्छा) नहीं बल्कि बूके(किताबो का सेटं) दी जाए.'** यानि फूलों के गुलदस्ता के बदले किताबों को भेंट करें या खादी के बने हुए गमछे. यह अपने आप में बहुत ही सराहनीय और स्वागत योग्य कदम है. यह न केवल नेताओं, बल्कि मोदीजी के प्रति वर्तमान में युवाओं में क्रेज को देखते हुए भी बहुत अच्छा संदेश जायेगा. युवा वर्ग दिखावे के लिए ही सही किताबों से रिश्ता जोड़ेगा, जब किताबों से रिश्ता जूड़ेगा तो बाकी रिश्ते भी अपने-आप धरातल पर जुड़ने लगेगे. इससे अन्य नेताओं, अधिकारियों में भी किताबें भेंट करने की परम्परा की शुरुआत होगी. जब किताबें भेंट होगी तो शुरु में लोग पलटना चालू करेंगे, फिर धीरे-धीरे पढ़ना. यह अपने आप में माननीय मोदी जी के क्रेज को देखते हुए समाज के लिए एक बेहतर परिवर्तन साबित होगा. ऐसे में हम आशा करते है कि इस तरह की परम्परा अन्य आयोजनों के लिए भी चालू की जानी चाहिए.

ऑनलाइन रिश्तों से कमजोर होते सामाजिक संबंध

आजकल ऑनलाइन सुविधाओं (दृश्य मीडिया, स्मार्ट फोन और ऑन लाईन सुविधाएं जैसे फेसबुक, ह्वाटसएप, मैसेन्जर, स्मार्ट फोन, ट्विटर, ब्लाग) के प्रति इतना लगाव है कि सारे रिश्ते-नाते, जीवन-मरण, चर्चा-परिचर्चा, सामाजिक ताना-बाना भी ऑन लाईन हो गए हैं.

पाश्चात्य संस्कृति की नकल में हम मदर्स डे, फादर्स डे, ग्रैड पा डे, ग्रैंड मदर्सडे आदि मनाने लगे है, वो भी नकल अधूरी. पाश्चात्य संस्कृति में लोग उपरोक्त डे पर सम्बन्धित व्यक्ति से जाकर मिलते है, उपहार देते है क्योंकि वे अन्य दिनों नही मिल पाते. हम तो साथ रहते है फिर भी डे मनाते है, जो कई वर्षो तक नहीं मिल पाते वे भी मिलने नहीं आते, केवल ऑन लाईन की दुनिया में मनाते है. सम्बन्धित व्यक्ति से मिलने नहीं आते. वे ऑन लाईन ऐसा दिखाते है मानो उनसे बड़ा मातृ भक्त, पितृ भक्त, गुरुभक्त पूरी दुनिया में कोई नहीं है. ऐसे लोगों के फेसबुक आदि पर बड़े प्रेममय विचार होते है.

लोग घर-परिवार का हर सुख-दुख तत्काल शेयर करते हैं. घर पर यदि किसी की मां की तबीयत खराब है तो फेसबुक, मैसेन्जर, इन्स्टाग्राम, फेसबुक पेज, ह्वाटसएप एवं इसके ग्रुप के जरिए अपनी संवेदना व्यक्त कर देता है. मानों माँ! माँ नहीं बल्कि कोई तीज-त्योहार हो, कोई प्रदर्शन की वस्तु हो जिस पर लोगों की पसंद-नापसंद ले ली जाए. सूचना को पोस्ट करने के बाद वह बार-बार लाईक को गिनकर आत्म संतोष करता है, अपने रुतबे को आंकता है और अपेक्षित पंसद संख्या न मिलने पर वह अवसादग्रस्त होने लगता है. ऑनलाइन रिश्तों की यह बढ़ती प्रवृत्ति समाज को गहरे सामाजिक संबंधो को भी कमजोर करती है. तत्काल परिणाम की बेचैनी को जन्म देती है. पारिवारिक स्नेह और भाईचारे की भावना में रुखापन आने लगता है. पुत्र के मोह में तड़पती मां सूखे शब्दों को छूकर, देखकर या पढ़कर क्या अनुभूति कर सकती है जो एक आत्मीय स्पर्श दे सकता है. इसलिए जरूरी है कि ऑनलाइन रिश्तों के सुखेपन को वास्तविकता की लाइन पर लाएं.

(गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी)

भारत के पितृपुरुषों का एकांत

—देवेन्द्र त्रिपाठी,
9451189527, ह्वाट्सएप से

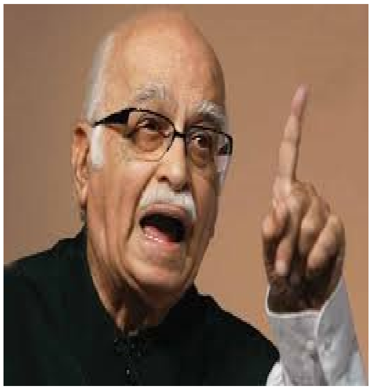

लालकृष्ण आडवाणी का एकांत भारत की राजनीति का एकांत है. हिन्दू वर्ण व्यवस्था के पितृपुरुषों का एकांत ऐसा ही होता है. जिस मकान को जीवन भर बनाता है, बन जाने के बाद खुद मकान से बाहर हो जाता है. वो आंगन में नहीं रहता है. घर की देहरी पर रहता है. सारा दिन और कई साल इस इंतजार में काट देता है कि भीतर से कोई पुकारेगा. बेटा नहीं तो पतोहू पुकारेगी, पतोहू नहीं तो पोता पुकारेगा. जब कोई नहीं पुकारता है तो खुद ही पुकारने लगता है. गला खखारने लगता है. घर के अंदर जाता भी है, लेकिन किसी को नहीं पाकर उसी देहरी पर लौट आता है. बीच-बीच में सन्यास लेने और हरिद्वार चले जाने की धमकी भी देता है. मगर फिर भी वही डेरा जमाए रहता है.

पिछले तीन साल के दौरान जब भी आडवाणी को देखा है, एक गुनाहगार की तरह नज़र आए हैं. बोलना चाहते है मगर किसी अनजान डर से चुप हो जाते है. जब भी चैनलों के कैमरों के सामने आए, बोलने से नज़रे चुराने लगे. आप आडवाणी के तमाम वीडियो निकाल कर देखिये. ऐसा लगता है उनकी आवाज़ चली गई हो या उन्हें शीशे के बक्से में बंद कर दिया गया हो और उसमें पानी भर रहा हो और वे बचाने को कह भी नहीं पा रहे हो. उनकी चीख नहीं आ रही है. उनके सामने से कैमरा गुज़र जाता है.

आडवाणी का एकांत उस पुरानी कमीज़ की तरह है जो बहुत दिनों से रस्सी पर सूख रही है, मगर कोई उतारने वाला भी नही है. बारिश में कभी भीगती है तो धूप में सिकुड़ जाती है. धीरे-धीरे कमीज़ मैली होने लगती है. फिर रस्सी से उतर कर नीचे कहीं गिरी मिलती है. जहां थोड़ी सी धूल जमी होती है, थोड़ा पानी होता है. कमीज़ को पता है कि धोने वाले के पास और भी कमीज़ है. नई कमीज़ है.

क्या आडवाणी एकांत में रोते होगें? सिसकते होंगे या कमरे में बैठे बैठे कभी चीखने लगते होगें, किसी को पुकारने लगते होंगे? बीच-बीच में उठकर अपने कमरे में चलने लगते होंगे, या किसी डर की आहट सुनकर वापस कुर्सी लौट आते होंगे? बेटी के अलावा दादा को कौन पुकारता होगा? क्या कोई मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री या साधारण नेता उससे मिलने आता होगा? आज हर मंत्री नहाने से लेकर खाने तक की तस्वीर ट्वीट कर देता है. दूसरे दल के नेताओं की जयंती की तस्वीर भी ट्वीट कर देता है. उन नेताओं की टाइपलाइन पर सब होंगे मगर आडवाणी नज़र नहीं आएंगे. सबको पता है. अब आडवाणी से मिलने का मतलब आडवाणी हो जाना है.

रोज सुबह उठकर वे एकांत में किसकी छवि देखते होंगे, वर्तमान की या इतिहास की. क्या वे दिन भर अख़बार पढ़ते होंगे या न्यूज चैनल देखते होंगे. फोन की घंटियों का इंतज़ार करते होंगे? उनसे मिलने कौन आता होगा? न तो वे मोदी मोदी करते हैं न ही कोई आडवाणी आडवाणी करता है. आखिर वे मोदी मोदी क्यों नहीं करते हैं, अगर यही करना प्रासंगिक होना है तो इसे करने में क्या दिक्कत है? क्या उनका कोई निजी विरोध है, तो वे इसे दर्ज क्यों नहीं करते है?

लोकसभा चुनाव से पहले आडवाणी ने एक ब्लाग भी बनाया था. दुनिया में कितना कुछ हो रहा है. उस पर तो वे लिख ही सकते है. इतने लोग जहां तहां जाकर लेक्चर दे रहे हैं, वहां आडवाणी भी जा सकते है. नेतृत्व और संगठन पर कितना कुछ बोल सकते है. कुछ नहीं तो उनके सरकारी आवास में फूल होंगे, पौधें होंगे, उनसे ही उनका नाता बन गया होगा, उन पर ही लिख सकते थे. फिल्म की समीक्षा लिख सकते हैं. वे आडवाणी के अलावा भी आडवाणी हो सकते थे. वे होकर भी क्यों नहीं हैं.

लालकृष्ण आडवाणी का एकांत भारत की राजनीति का एकांत है. हिन्दू वर्ण व्यवस्था के पितृपुरुषों का एकांत ऐसा ही होता है. जिस मकान को जीवन भर बनाता है, बन जाने के बाद खुद मकान से बाहर हो जाता है.

आडवाणी ने अपने निवास में प्रेस कांफ्रेंस के लिए बकायदा एक हॉल बनवाया था. तब अपनी प्रासंगिकता को लेकर कितने आश्वस्त रहे होंगे. उस हॉल में कितने कार्यक्रम हुए है. कहीं ऐसा तो नहीं कि वे दिन में एक बार उस हॉल में लौटते होंगे. कैमरे और सवालों के शोर को सुनते होंगे. सुना है कुछ आवाजें दीवारों पर अपना घर बना लेती हैं. जहां वे सदियों तक गूंजती रहती है. क्या वो हॉल अब भी होगा वहां?

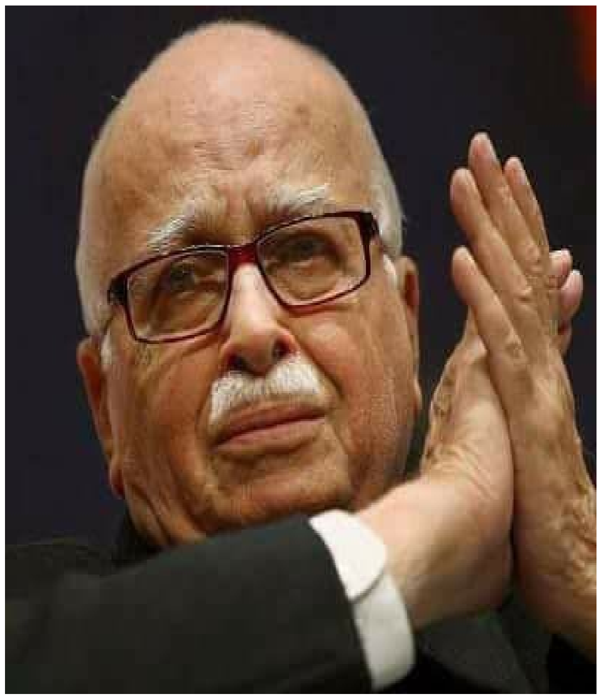

आडवाणी अपने एकांत के वर्तमान में ऐसे बैठे नज़र आते हैं जैसे उनका कोई इतिहास न हो. भाजपा आज अपने वर्तमान में शायद एक नया इतिहास देख रही है. आडवाणी उस इतिहास में भी नहीं थे. वे दिल्ली में नहीं, अंडमान में लगते हैं. जहां समंदर की लहरों की निर्ममता सेलुलर की दीवारों ये टकराती रहती है. दूर-दूर तक कोई किनारा नज़र नहीं आता है. कहीं वे कोई डायरी तो नहीं लिख रहे है? दिल्ली के अंडमान की डायरी.!

सत्ता से वजूद मिटा कांग्रेस का लेनि नाम मिट गया आडवाणी का. सोनिया गांधी से अब भी लोग गाहे-बगाहे मिलने चले जाते हैं. राष्ट्रपति के उम्मीदवार का नाम तय हो जाता है तो प्रधानमंत्री सोनिया गांधी को फोन करते है, जिनकी पार्टी से वो भारत को मुक्त कराना चाहते हैं. क्या उन्होंने आडवाणी जी को भी फोन किया होगा? आज की भाजपा आडवाणी मुक्त भाजपा है. उस भाजपा में आज कांग्रेस है, सपा है, बसपा है सब है. संस्थापक आडवाणी नहीं है. क्या किसी ने ऐसा भी कोई ट्वीट देखा है कि प्रधानमंत्री ने आडवाणी को भी राष्ट्रपति के उम्मीदवार के बारे में बताया है? क्या रामनाथ कोविंद मार्गदर्शक मंडल से भी मिलने जायेंगे? मार्गदर्शक मंडल जिसका न कोई दर्शक है न कोई मार्ग.

भारतीय जनता पार्टी का यह संस्थापक विस्थापन की ज़िदगी जी रहा है. वो न अब संस्कृति में है न हीं राष्ट्रवाद के आख्यान में है. मुझे आडवाणी पर दया करने वाले पसंद नहीं है, न ही उनका मज़ाक उड़ाने वाले. आडवाणी हम सबकी नियति है. हम सबको एक दिन अपने जीवन में आडवाणी ही होना है. सत्ता से, संस्थान से और समाज से. मैं उनकी चुप्पी को अपने भीतर भी पढ़ना चाहता हूं. भारत की राजनीति में सन्यासी होने का दावा करने वाला प्रासंगिक हो रहे है और सन्यास से बचने वाले आडवाणी अप्रासंगिक हो रहे है. आडवाणी एक घटना की तरह घट रहे है. जिसे दुर्घटना के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए.

जिन लोगों ने यह कहा कि विपक्ष आडवाणी को अपना उम्मीदवार बना दे, वो आडवाणी के अनुशासित जीवन का अपमान कर रहे थे. उन्हें यह पता नहीं है कि विपक्ष की हालत भी आडवाणी जैसी है. आडवाणी के साथ क्रूरता उनके साथ सहानुभूति रखने वाले भी कर रहे है और जो उनके साथ है वो तो कर ही रहे हैं. आडवाणी का एक दोष है. उन्होंने ज़िंदा होने की एक बुनियादी शर्त का पालन नहीं किया है. वो शर्त है बोलना. अगर राजनीति में रहते हुए बोल नहीं रहे है तो वे भी राजनीति के साथ धोखा कर रहे हैं तब जब राजनीति उनके साथ धोखा कर रही है. उन्हें ज़ोर से चीखना चाहिए, रोना चाहिए ताकि आवाज़ बाहर तक आए. अगर बग़ावत नहीं है तो वो भी कहना चाहिए. कहना चाहिए कि मैं खुश हूं. मैं डरता नहीं हूं. ये चुप्पी मेरा चुनाव है न कि किसी के डर के कारण है.

क्या टुकड़ों में बटेगा पाकिस्तान

- हमारा पड़ोसी कहने को तो पाक है परन्तु उसका इरादा ना पाक है. वह अपने पड़ोसी देशों में आतंकवादी गतिविधियां चला रहा है.
- पाकिस्तान में जिस तरह से विभिन्न क्षेत्रों से आजादी की आवाज उठ रही है वह उसके के टुकड़े होने की ओर संकेत है।
- इसमें भी कोई संकोच नहीं है कि देश द्रोहियों को भारत सरकार बढ़ावा दे रही है।

-डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री

हमारा पड़ोसी कहने को तो 'पाक' है परन्तु उसका इरादा 'ना पाक' है. वह जैसा व्यवहार अपने पड़ोसियों से करता है वैसा व्यवहार कोई भी सभ्य पड़ोसी नहीं कर सकता. वह अपने पड़ोसियों भारत और अफगानिस्तान से कई दशकों से अघोषित युद्ध कर रहा है. दोनों देशों में आतंकवादी गतिविधियां चला रहा है. आतंक का पनाहगाह और संरक्षक है पाकिस्तान यह जगजाहिर है. यह बात भी सही है कि अमेरिका अपने निजी स्वार्थो के कारण आतंक की फैक्ट्री पाकिस्तान को संरक्षण देता है. अमेरिका द्वारा आतंकवाद से लड़ने के लिए जो धनराशि पाकिस्तान को दिया जाता है उसका उपयोग वह आतंकवादियों को बढ़ावा देने में करता है. यह बात भी सही है कि आतंकवाद का जनक अमेरिका है, पाकिस्तान तो उसका पालनहार है. हमारा पड़ोसी कहने को तो पाक है परन्तु उसका इरादा ना पाक है. वह जैसा व्यवहार अपने पड़ोसियों से करता है वैसा व्यवहार कोई भी सभ्य पड़ोसी नहीं कर सकता. वह अपने पड़ोसियों भारत और अफगानिस्तान से कई दशकों से अघोषित युद्ध कर रहा है. दोनों देशों में आतंकवादी गतिविधियां चला रहा है. आतंक का पनाहगाह और संरक्षक है पाकिस्तान यह जगजाहिर है. यह बात भी सही है कि अमेरिका अपने निजी स्वार्थो के कारण आतंक की फैक्ट्री पाकिस्तान को संरक्षण देता है. अमेरिका द्वारा आतंकवाद से लड़ने के लिए जो धनराशि पाकिस्तान को दिया जाता है उसका उपयोग वह आतंकवादियों को बढ़ावा देने में करता है. यह बात भी सही है कि आतंकवाद का जनक अमेरिका है, पाकिस्तान तो उसका पालनहार है.

पाकिस्तान में जिस तरह से अलग-अलग इलाकों में आजादी की आवाज उठ रही है और पाकिस्तान सैनिक बूटों के बल पर उसे दबाने की कोशिश कर रहा है वह पाकिस्तान के टुकने होने की ओर संकेत है. पाकिस्तान जिस मानवाधिकार की बात कर कश्मीर की आजादी की बात करता है और कश्मीर में मारे जाने वाले आतंकवादियों को शहीद बताकर घड़ियाली आंसू बहाता है उससे साफ है कि कश्मीर की आजादी की मांग करने वाले भारतीय नही अप्रत्यक्ष रूप में पाकिस्तानी हैं। कश्मीर घाटी में जो आतंकी घुस पैठ होती है उसके पीछे यही पाक परस्त कश्मीरी हैं. यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि देश द्रोहियों को भारत सरकार बढ़ावा दे रही है. पी.डी.पी. जैसे राजनीतिक दल जो अलगाव वादियों का समर्थक है उसके साथ सरकार बनाती है. जो खुलेआम कश्मीर में पाकिस्तान का झण्डा लहराते हुए पाकिस्तान जिन्दावाद और भारत मुर्दावाद के नारे लगाते हैं, सेना पर पत्थर बरसवाते हैं, उन्हें भारत सरकार द्वारा सारी सुख सुविधा दी जाती है. जबकि उनके विरूद्ध भारत सरकार को सुविधा देने के बजाये देशद्रोह की कार्यवाही की जानी चाहिए. आतंकी सईयद सलाउद्दीन पाकिस्तान में बैठकर भारत के विरूद्ध षड़यन्त्र रचता है. उसके बेटे कश्मीर सरकार की सेवा में हैं.

क्या यह आतंकियों को बढ़ावा देना नहीं है. पाकिस्तान में जिस तरह से अलग-अलग इलाकों में आजादी की आवाज उठ रही है और पाकिस्तान सैनिक बूटों के बल पर उसे दबाने की कोशिश कर रहा है वह पाकिस्तान के टुकड़े होने की ओर संकेत है. पाकिस्तान जिस मानवाधिकार की बात कर कश्मीर की आजादी की बात करता है और कश्मीर में मारे जाने वाले आतंकवादियों को शहीद बताकर घड़ियाली आंसू बहाता है उससे साफ है कि कश्मीर की आजादी की मांग करने वाले भारतीय नही अप्रत्यक्ष रूप में पाकिस्तानी हैं. कश्मीर घाटी में जो आतंकी घुस पैठ होती है उसके पीछे यही पाक परस्त कश्मीरी हैं. यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि देश द्रोहियों को भारत सरकार बढ़ावा दे रही है. पी.डी. पी. जैसे राजनीतिक दल जो अलगाव वादियों का समर्थक है उसके साथ सरकार बनाती है. जो खुलेआम कश्मीर में पाकिस्तान का झण्डा लहराते हुए पाकिस्तान जिन्दावाद और भारत मुर्दावाद के नारे लगाते हैं, सेना पर पत्थर बरसवाते हैं, उन्हें भारत सरकार द्वारा सारी सुख सुविधा दी जाती है. जबकि उनके विरूद्ध भारत सरकार को सुविधा देने के बजाये देशद्रोह की कार्यवाही की जानी चाहिए. आतंकी सईयद सलाउद्दीन पाकिस्तान में बैठकर भारत के विरूद्ध षड़यन्त्र रचता है. उसके बेटे कश्मीर सरकार की सेवा में हैं. क्या यह आतंकियों को बढ़ावा देना नहीं है.

उड़ी में निहत्थे 18 सैनिकों को आतंकियों ने शहीद कर दिया. उसके बाद भी लगातार आतंकियों का घुस पैठ जारी है. सवाल तो यह भी है कि चप्पे-चप्पे पर इण्डो-पाक सीमा पर सुरक्षा बलों की तैनाती और तमाम तामझाम के बाद भी आतंकी हमारे क्षेत्र में घुस कैसे जाते हैं? अमेरिका आतंकवाद के सफाये के नाम पर विश्व को गुमराह कर रहा है. वह आतंक के सरगना हाफिज सईद पर इनाम घोषित करता है? पर उसे पकड़ने का नाम तक नहीं लेता. यह हम इसलिए कह रहे हैं कि हाफिज सईद पाकिस्तान में किसी बिल में दुबक कर नहीं बैठा है. यह सभी जानते हैं कि वह पाकिस्तान में खुलेआम घुमता ही नहीं बल्कि सभायें करता है. यदि छिप कर रहने वाले ओसामा बिन लादेन का पता लगाकर अमेरिका मार सकता है तो खुलेआम घुमने वाले और सभा कर अमेरिका और भारत के विरूद्ध जहर उगलने वाले हाफिज सईद को क्यों नहीं पकड़ता. उड़ी में निहत्थे 18 सैनिकों को आतंकियों ने शहीद कर दिया. उसके बाद भी लगातार आतंकियों का घुसपैठ जारी है. सवाल तो यह भी है कि चप्पे-चप्पे पर इण्डो-पाक सीमा पर सुरक्षा बलों की तैनाती और तमाम तामझाम के बाद भी आतंकी हमारे क्षेत्र में घुस कैसे जाते हैं.

(लेखक भाग्य दर्पण हिन्दी मासिक के संपादक है)

पत्थर का मतलब भगवान होता है

द्वारा-**भूपेन्द्र कुमार मिश्र**, कोतमा

स्कूल में मैडम ने कहा-'अपनी पसंद के किसी भी विषय पर एक निबंध लिखो'

एक बालक ने निबंध लिखाः-विषय-'पत्थर' पत्थर मतलब भगवान होता है क्योंकि वो हमारे आजू बाजू सब तरफ होता है. जहाँ भी देखो नजर आता है. अपरिचित गलियों में वो हमें कुत्तों से बचाता है, हाईवे पर गाँव कितनी दूर है, ये बताता है, घर की बाउंड्रीवाल में लगकर हमारी रक्षा करता है, रसोई में सिलबट्टा बनकर माँ के काम आता है, बच्चों को पेड़ से आम, जामुन, बेर आदि तोड़कर देता है. कभी कभी हमारे ही सिर पर लगकर खून निकाल देता है और इस प्रकार हमें शत्रु की पहचान कराता है. जिन युवाओं का माथा फिरा हो तब उनके हाँथ लगाकर खिड़कियों के काँच तोड़कर उनका

क्रोध शांत करता है. रास्ते पर मजदूरों का पेट भरने के लिए खुद को ही तुड़वाता है. शिल्पकार के मन के सौंदर्य को साकार करने के लिए छैनियों के घाव सहन करता है. किसान को पेड़ के नीचे आराम देने के लिए तकिया बन जाता है.

बचपन में स्टंप तो कभी लघोरी आदि बनकर हमारे साथ खेलता है. हमारी सहायता के लिए भगवान की तरह तुरंत उपलब्ध होता है. मुझे बताइए कि 'भगवान के अलावा और कौन करता है हमारे लिए इतना?' माँ कहती है, 'पत्थर पर सिन्दूर लगाकर उस पर विश्वास करो तो वो भगवान बन जाता है.' मतलब, पत्थर ही भगवान होता है. इसीलिए कहते हैं कि कण-कण में भगवान हैं.

तथ्यः सकरात्मक सोचो

रक्षाबंधन

-पं० सुधा तिवारी

एक सौ 100 यज्ञ पूर्ण कर लेने पर दानवेन्द्र राजा बलि के मन में स्वर्ग प्राप्ति की इच्छा बलवती हो गई तो इन्द्र का सिंहासन डोलने लगा. इन्द्र आदि देवताओं ने भगवान विष्णु से रक्षा की प्रार्थना की. भगवान ने वामन अवतार लेकर ब्राह्मण का वेष धारण कर लिया और राजा बलि से भिक्षा मांगने पहुँच गए. उन्होंने बलि से तीन पग भूमि भिक्षा में मांग ली.

बलि के गुरु शुक्रदेव ने ब्राह्मण रुप धारण किए हुए विष्णु को पहचान लिया और बलि को इस बारे में सावधान कर दिया किंतु दानवेन्द्र राजा बलि अपने वचन से न फिरे और तीन पग भूमि दान कर दी.

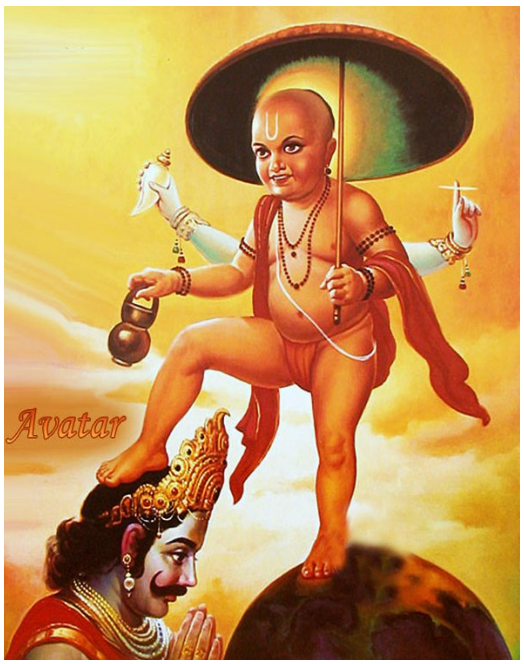

वामन रूप में भगवान ने एक पग में स्वर्ग और दूसरे पग में पृथ्वी को नाप लिया. तीसरा पैर कहाँ रखें? बलि के सामने संकट उत्पन्न हो गया. यदि वह अपना वचन नहीं निभाता तो अधर्म होता. आखिरकार उसने अपना सिर भगवान के आगे कर दिया और कहा तीसरा पग आप मेरे सिर पर रख दीजिए. वामन भगवान ने वैसा ही किया. पैर रखते ही वह रसातल लोक में पहुँच गया.

जब बलि रसातल में चला गया तब बलि ने अपनी भक्ति के बल से भगवान को रात-दिन अपने सामने रहने का वचन ले लिया और भगवान विष्णु को उनका द्वारपाल बनना पड़ा. भगवान के रसातल निवास से परेशान लक्ष्मी जी ने सोचा कि यदि स्वामी रसातल में द्वारपाल बन कर निवास करेंगे तो बैकुंठ लोक का क्या होगा? इस समस्या के समाधान के लिए लक्ष्मी जी को नारद जी ने एक उपाय सुझाया. लक्ष्मी जी ने राजा बलि के पास जाकर उसे रक्षाबन्धन बांधकर अपना भाई बनाया और उपहार स्वरुप अपने पति भगवान विष्णु को अपने साथ ले आयीं. उस दिन श्रावण मास की पूर्णिमा तिथि थी जिसकी स्मृति में इस दिन रक्षा-बंधन मनाया जाने लगा.

भविष्य पुराण की एक कथा के अनुसार एक बार देवता और दैत्यों (दानवों) में बारह वर्षो तक युद्ध हुआ परन्तु देवता विजयी नहीं हुए. इंद्र हार के भय से दुःखी होकर देवगुरु बृहस्पति के पास विमर्श हेतु गए. गुरु बृहस्पति के सुझाव पर इंद्र की पत्नी महारानी शची ने श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन विधि-विधान से व्रत करके रक्षासूत्र तैयार किए और स्वस्तिवाचन के साथ ब्राह्मण की उपस्थिति में इंद्राणी ने वह सूत्र इंद्र की दाहिनी कलाई में बांधा, जिसके फलस्वरुप इन्द्र सहित समस्त देवताओं की दानवों पर विजय हुई.

रक्षा विधान के समय निम्न लिखित मंत्रोच्चार किया गया था जिसका आज भी विधिवत पालन किया जाता हैः

येन बद्धो बली राजा
दानवेन्द्रो महाबलिः।
तेन त्वां प्रतिबध्नाम
रक्षे माचल माचलः।।

जिस रक्षा सूत्र से महान शक्तिशाली राजा बली को बाँधा गया था, उसी सूत्र से मैं आपको बाँध रहा हूँ, आप अपने वचन से कभी विचलित न होना.

यह रक्षा विधान श्रवण मास की पूर्णिमा को प्रातः काल संपन्न किया गया जिस दिन से रक्षा-बंधन अस्तित्व में आया और श्रवण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने लगा. रक्षाबंधन सामाजिक, पौराणिक, धार्मिक तथा ऐतिहासिक भावना के धागे से बना एक ऐसा पवित्र बंधन है, जिसे जनमानस में रक्षाबंधन के नाम से सावन मास की पूर्णिमा को भारत में ही नही वरन् नेपाल तथा मारिशस में भी बहुत उल्लास एवं धूम-धाम से मनाया जाता है.

रक्षाबंधन की परंपरा महाभारत में भी प्रचलित थी, जहाँ श्री कृष्ण की

सलाह पर सैनिकों और पांडवों को रक्षा सूत्र बाँधा गया था. महाभारत काल में द्रौपदी द्वारा श्री कृष्ण को तथा कुन्ती द्वारा अभिमन्यु को राखी बांधने के वृत्तांत मिलते हैं. महाभारत में ही रक्षाबंधन से संबंधित कृष्ण और द्रौपदी का एक और वृत्तांत मिलता है। जब कृष्ण ने सुदर्शन चक्र से शिशुपाल का वध किया तब उनकी तर्जनी में चोट आ गई. द्रौपदी ने उस समय अपनी साड़ी फाड़कर उनकी उँगली पर पट्टी बाँध दी. यह श्रावण मास की पूर्णिमा का दिन था. श्रीकृष्ण ने बाद में द्रौपदी के चीर-हरण के समय उनकी लाज बचाकर भाई का धर्म निभाया था.

राजपूत जब लड़ाई पर जाते थे तब महिलाएं उनको माथे पर कुमकुम तिलक लगाने के साथ -साथ हाथ में रेशमी धागा भी बाँधती थी. इस विश्वास के साथ कि यह धागा उन्हें विजय श्री के साथ वापस ले आएगा.

रानी कर्मवती एवं हुमायूँ का प्रसंग-जब रक्षाबंधन के प्रचलन की बात की जाती है तो रानी कर्मवती द्वारा हुमायु को भेजे रक्षासूत्र को अनदेखा नही किया जा सकता, जिसे मुगल सम्राट ने समझा और निभाया भी. मुगल काल के दौर में जब मुगल बादशाह हुमायूँ चितौड़ पर आक्रमण करने बढ़ा तो राणा सांगा की विधवा कर्मवती ने हुमायूँ को राखी भेजकर रक्षा वचन ले लिया. हुमायूँ ने इसे स्वीकार करके चितौड़ पर आक्रमण का खयाल दिल से निकाल दिया और कालांतर में मुसलमान होते हुए भी राखी की लाज निभाने के लिए चितौड़ की रक्षा हेतु बहादुरशाह के विरूद्ध मेवाड़ की ओर से लड़ते हुए कर्मवती और मेवाड़ राज्य की रक्षा की.

सुभद्राकुमारी चौहान ने शायद इसी का उल्लेख अपनी कविता, 'राखी' में किया हैः

शत्रुओं को भी
जब-जब राखी भिजवाई।
रक्षा करने दौड़ पड़े वे
राखी-बन्द शत्रु-भाई।।

सिकंदर और राजा पुरू का प्रसंग-सिकंदर की पत्नी भारत वासियों की इस त्योहार की भावना एवं निष्ठा के प्रति परिचित होते हुये उसने अपने पति के हिंदू शत्रु पुरू को राखी बाँध कर अपना मुँह बोला भाई बनाया और युद्ध के समय सिकंदर को न मारने का वचन लिया. पुरू ने युद्ध के दौरान हाथ में बंधी राखी का और अपनी बहन को दिये हुए वचन का सम्मान करते हुए सिकंदर को जीवनदान दिया.

ऐतिहासिक युग में भी सिकंदर व पोरस ने युद्ध से पूर्व रक्षा-सूत्र की अदला-बदली की थी. युद्ध के दौरान पोरस ने जब सिकंदर पर घातक प्रहार हेतु अपना हाथ उठाया तो रक्षा-सूत्र को देखकर उसके हाथ रुक गए और वह बंदी बना लिया गया. सिकंदर ने भी पोरस के रक्षा-सूत्र की लाज रखते हुए और एक योद्धा की तरह व्यवहार करते हुए उसका राज्य वापस लौटा दिया.

क्रांतिवीर चन्द्रशेखर आजाद का प्रसंग-बात उन दिनों की है जब क्रांतिकारी चंद्रशेखर आजाद स्वतंत्रता के लिए संघर्षरत थे और फिरंगी उनके पीछे लगे थे.

फिरंगियों से बचने के लिए शरण लेने हेतु आजाद एक तूफ़ानी रात को एक घर में जा पहुंचे जहां एक विधवा अपनी बेटी के साथ रहती थी. हट्टे-कट्टे आजाद को डाकू समझ कर पहले तो वृद्धा ने शरण देने से इनकार कर दिया, लेकिन जब आजाद ने अपना परिचय दिया तो उसने उन्हें ससम्मान अपने घर में शरण दे दी. बातचीत से आजाद को आभास हुआ कि गरीबी के कारण विधवा की बेटी की शादी में कठिनाई आ रही है. आजाद ने महिला को कहा, 'मेरे सिर पर पाँच हजार रुपए का इनाम है, आप फिरंगियों को मेरी सूचना देकर मेरी गिरफ्तारी पर पाँच हजार रुपए का इनाम पा सकती हैं, जिससे आप अपनी बेटी का विवाह सम्पन्न करवा सकती हैं.'

यह सुन विधवा रो पड़ी व कहा- 'भैया! तुम देश की आजादी हेतु अपनी जान हथेली पर रखे घूमते हो और न जाने कितनी बहू-बेटियों की इज्जत तुम्हारे भरोसे है. मैं ऐसा हरगिज नहीं कर सकती.' यह कहते हुए उसने एक रक्षा-सूत्र आजाद के हाथों में बाँध कर देश-सेवा का वचन लिया. सुबह जब विधवा की आँखें खुली तो आजाद जा चुके थे और तकिए के नीचे पांच हजार रुपये पड़े थे. उसके साथ एक पर्ची पर लिखा था-'अपनी प्यारी बहन हेतु एक छोटी सी भेंट-आजाद.'

अनेक साहित्यिक ग्रंथों में रक्षा

बंधन के पर्व का विस्तृत वर्णन मिलता है. हरिकृष्ण प्रेमी के ऐतिहासिक नाटक, 'रक्षाबंधन' का 98वाँ संस्करण प्रकाशित हो चुका है. मराठी में शिंदे साम्राज्य के विषय में लिखते हुए रामराव सुभानराव बर्गे ने भी एक नाटक लिखा है जिसका शीर्षक है 'राखी उर्फ रक्षाबंधन'.

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला एवं महादेवी वर्मा का प्रसंग-महादेवी वर्मा को जब ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, तो एक साक्षात्कार के दौरान उनसे पूछा गया था, 'आप इस एक लाख रुपये का क्या करेंगी?' कहने लगी, 'न तो मैं अब कोई कीमती साड़ियाँ पहनती हूँ, न कोई सिंगार-पटार कर सकती हूँ, ये लाख रुपये पहले मिल गए होते तो भाई को चिकित्सा और दवा के अभाव में यूँ न जाने देती.' कहते-कहते उनका दिल भर आया. कौन था उनका वो 'भाई'? हिंदी के युग-प्रवर्तक औघड़-फक्कड़-महाकवि पंडित सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी के मुंहबोले भाई थे.

एक बार वे रक्षा-बंधन के दिन सुबह-सुबह जा पहुंचे अपनी लाडली बहन के घर और रिक्शा रुकवाकर चिल्लाकर द्वार से बोले, 'दीदी, जरा बारह रुपये तो लेकर आना.' महादेवी रुपये तो तत्काल ले आई, पर पूछा, 'यह तो बताओ भैय्या, यह सुबह-सुबह आज बारह रुपये की क्या जरूरत आन पड़ी?'

हालाँकि, 'दीदी' जानती थी कि उनका यह दानवीर भाई रोजाना ही किसी न किसी को अपना सर्वस्व दान कर आ जाता है, पर आज तो रक्षा-बंधन है, आज क्यों?

निरालाजी सरलता से बोले, 'ये दुई रुपया तो इस रिक्शा वाले के लिए और दस रुपये तुम्हें देना है. आज राखी है ना! तुम्हें भी तो राखी बँधवाई के पैसे देने होंगे.'

रक्षाबंधन एवं फिल्म जगत-'राखी' और 'रक्षा-बंधन' पर अनेक फिल्में बनीं और अत्यधिक लोकप्रिय हुई, इनमें से कुछ के गीत तो मानों अमर हो गए. इनकी लोकप्रियता आज दशकों पश्चात् भी बनी हुई है. बहन-भाई के स्नेह पर सबसे पुरानी और लोकप्रिय फिल्मों में से एक है 1959 में बनी 'छोटी बहन', जिसका गीत, 'भैया मेरे राखी के बंधन को निभाना' आज तक जनमानस गुनगुनाता है.

सन 1962 की 'राखी' फिल्म के निर्माता थे-ए. भीमसिंह, कलाकार थे अशोक कुमार, वहीदा रहमान, प्रदीप कुमार और अमिता. इस फिल्म में राजेंद्र कृष्ण ने शीर्षक गीत लिखा था-'राखी धागों का त्यौहार, बँधा हुआ इक-इक धागे में भाई-बहन का प्यार'

सन् 1971 में प्रदर्शित 'हरे रामा हरे कृष्णा' भी भाई-बहन के प्यार पर आधारित फिल्म थी. इस फिल्म का गीत, 'फूलों का तारों का सबका कहना है, एक हजारों में मेरी बहना है' किसे याद न होगा! 1974 में प्रदर्शित धर्मेंद्र की सुपरहिट फिल्म 'रेशम की डोर' में सुमन कल्याणपुर द्वारा गाया गया यह गाना, 'बहना ने भाई की कलाई पे प्यार बाँधा है, प्यार के दो तार से संसार बाँधा है....' भी लोकप्रियता की बुलंदियों को छूता हुआ आज तक गाया जाता है. चंबल की कसम का 'चंदा रे मेरे भइया से कहना, बहना याद करे' गीत भी आज तक याद किया जाता है. रक्षा बंधन पर आधारित अन्य लोकप्रिय गीतों में 'अनपढ़' फिल्म का लता मंगेश्कर का गाया 'रंग बिरंगी राखी लेकर आई बहना' और 'काजल' का आशा भोंसले का गाया 'मेरे भइया मेरे चंदा मेरे अनमोल रतन' भी सम्मिलित हैं.

आपसी सौहार्द तथा भाई-चारे की भावना से ओतप्रोत रक्षाबंधन का त्योहार हिन्दुस्तान में अनेक रूपों में दिखाई देता है. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पुरूष सदस्य परस्पर भाई-चारे के लिए एक दूसरे को भगवा रंग की राखी बाँधते हैं. राजस्थान में ननद अपनी भाभी को एक विशेष प्रकार की राखी बाँधती है, जिसे लुम्बी कहते हैं. कई जगह बहने भी आपस में राखी बाँध कर एक दूसरे को सुरक्षा को भरोसा देती हैं. रक्षा सूत्र के साथ अनेक प्रान्तों में इस पर्व को कुछ अलग ही अंदाज में मनाते हैं. महाराष्ट्र में ये त्योहार नारियल पूर्णिमा या श्रावणी के नाम से प्रचलित है. तमिलनाडु, केरल, महाराष्ट्र और उड़िसा के दक्षिण भारतीय ब्राह्मण इस पर्व को अवनी अवित्तम कहते हैं. कई स्थानो पर इस दिन नदी या समुद्र के तट पर स्नान करने के बाद ऋषियों का तर्पण कर नया यज्ञोपवीत धारण किया जाता है. रक्षाबंधन के इस पावन पर्व का महत्व इसलिए और अधिक हो जाता है, क्योकि इसी दिन अमरनाथ की यात्रा सम्पूर्ण होती है, जिसकी शुरुवात गुरु पूर्णिमा से होती है.

रविन्द्रनाथ टैगोर ने तो, रक्षाबंधन के त्योहार को स्वतंत्रता के धागे में पिरोया. उनका कहना था कि, राखी केवल भाई-बहन का त्योहार नही है अपितु ये इंसानियत का पर्व है, भाई-चारे का पर्व है. जहाँ जातिय और धार्मिक भेद-भाव भूलकर हर कोई एक दूसरे की रक्षा कामना हेतु वचन देता है और रक्षा सूत्र में बँध जाता है. जहाँ भारत माता के पुत्र आपसी भेद-भाव भूलकर भारत माता की स्वतंत्रता और उसके उत्थान के लिए मिलजुल कर प्रयास करते.

रक्षा के नजरिये से देखें तो, राखी का ये त्योहार देश की रक्षा, पर्यावरण की रक्षा तथा लोगों के हितों की रक्षा के लिए बाँधा जाने वाला महापर्व है. जिसे धार्मिक भावना से बढकर राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाने में किसी को आपत्ति नही होनी चाहिए. भारत जैसे विशाल देश में बहने सीमा पर तैनात सैनिकों को रक्षासूत्र भेजती हैं एवं स्वंय की सुरक्षा के साथ उनकी लम्बी आयु और सफलता की कामना करती हैं. हमारे देश में राट्रपति भवन में तथा प्रधानमंत्री कार्यालय में भी रक्षा बंधन का आयोजन बहुत उल्लास के साथ मनाया जाता है.

रक्षाबंधन एक ऐसा इकलौता त्योहार है जिसके लिए हमारे राष्ट्रीय डाकघर में एक विशेष लिफाफे को बहनों के लिए जारी किया गया है. लिफाफे की कीमत 5 रुपए और 5 रुपए डाक का शुल्क. इसमें राखी के त्योहार पर बहनें, भाई को मात्र पाँच रुपये में एक साथ तीन-चार राखियाँ तक भेज सकती हैं. डाक विभाग की ओर से बहनों को दिये इस तोहफे के तहत 50 ग्राम वजन तक राखी का लिफाफा मात्र पाँच रुपये में भेजा जा सकता है, जबकि सामान्य 20 ग्राम के लिफाफे में एक ही राखी भेजी जा सकती है. यह सुविधा रक्षाबन्धन तक ही उपलब्ध रहती है. रक्षाबन्धन के अवसर पर बरसात के मौसम का ध्यान रखते हुए डाक-तार विभाग ने 2007 से बारिश से खराब न होने वाले लिफाफे भी उपलब्ध कराये हैं.

भाई-बहन का रक्षासूत्र 'बंधन'

रक्षाबंधन के पर्व पर एक बहन भाई को रक्षासूत्र (राखी) बाँधती है उसके एवज में भाई अपनी श्रद्धानुसार एक बहन को उपहार (सूट, नकद, बच्चों के लिये भेंट) इत्यादि देता है और उसकी रक्षा का वचन भी देता है. ये हमारी हिंदू धर्म की परम्परा भी रही है. पर आज के समय में भाई दूसरी सारी चीजें तो समयानुसार दे देता है पर अपनी अपनी आजिविका को चलाने हेतु दूर होने और अन्य कारणो से उसकी रक्षा का भार उतार नहीं पाता. इसी को ध्यान में रखते हुए केन्द्र सरकार की एक योजना है 'बंधन'.

योजनाः-भाईयों को पहले ये पता करना होगा की उनकी बहन का खाता खुला हुआ है या नहीं. यदि है तो ठीक नहीं तो खुलवाये उसके बाद भाई को बैंक/डाकघर जाकर बंधन योजना का फार्म भरना होगा. उस फार्म में उनकी बहन का सारा विवरण भरना होगा. जैसे खाता नम्बर, जन्म दिनांक, उसका पता, उसके नामिनी का नाम आदि. उसके बाद 600/-रुपिये फिक्स्ड डिपाजिट के हिसाब से जमा कर, बंधन कार्ड लेना होगा. जब बहन राखी बाँधने आये तब उसे वो कार्ड उपहार स्वरूप दे! उसे समझाये, इस कार्ड को वो अपने बैक/डाकघर में जाकर जमा करवा दे. इससे बहन एवं उसके परिवार को जीवन भर कि सुरक्षा प्राप्त होगी. अर्थात भाई जीवन में केवल एक बार 600रु० जमा कर जो कार्ड खरीदेगा उससे इस साल 12रु-का दुर्घटना बीमा और 330रु० की सुरक्षा बीमा हो जायेगा और शेष रकम उसके खाते में जमा रहेगी और उससे एक साल बाद जो ब्याज बनेगा उससे अगले साल फिर यही किश्त अपने आप जमा हो जायेगी और यही प्रक्रिया अनवरत चलती रहेगी और बहन को कभी भी इसकी किश्त जमा करवाने बैंक नहीं जाना पड़ेगा और उसे बेठे बिठाये एक भाई की तरफ से चार लाख रुपये का बीमा मिल जायेगा. यानी जीवन में कभी भी बहन के जीवन पर संकट आये उस दिन उसके परिवार को उसके बच्चो को जीवन के पथ पर खड़ा करने के लिये एक भाई की तरफ से अनमोल तोहफा होगा.

ये कहना अतिश्योक्ति न होगी कि रक्षा की कामना लिये भाई-चारे और सदभावना का ये धार्मिक पर्व सामाजिक रंग के धागे से बंधा हुआ है, जहाँ लोग जातिय और धार्मिक बंधन भूलकर एक रक्षासूत्र में बंध जाते है.

भाई बहिन के आपसी प्रेम के रूप में प्रसिद्ध रक्षाबंधन का यह त्योहार ब्राह्मणों के पावन पर्व के रूप में भी जाना जाता है. जैसे होली शूद्र वर्ण का त्योहार, दीपावली वैश्य वर्ण का त्योहार एवं दशहरा क्षत्रिय वर्ण का त्योहार माना जाता है, वैसे ही रक्षाबंधन को ब्राह्मण वर्ण के त्योहार के रूप में स्मरण किया जाता है. प्राचीन काल से प्रसंग भले ही अलग-अलग हो परंतु प्रत्येक प्रसंग में रक्षा की ज्योति ही प्रज्वलित होती रही है. पुरातन काल में रक्षा की भावना के उद्देश्य लिए ब्राह्मण क्षत्रिय राजाओं को रक्षा सूत्र बांधते थे, जहाँ राजा और जमींदार जैसे शक्तिवान एवं धनवान लोग उन्हे सुरक्षा प्रदान करने के साथ जीवन उपयोगी वस्तुएं भी उपहार में दिया करते थे.

रक्षाबंधन अर्थात रक्षा की कामना लिए ऐसा बंधन जो पुरातन काल से इस सृष्टी पर विद्यमान है. सम्पूर्ण भारत में बहन को रक्षा का वचन देता भाईयों का प्यार भरा उपहार रक्षाबंधन के त्योहार का संदेश है।

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र मेंः कैलाश गौतम सम्मान-(हास्य/व्यंग्य रचना), स्व.किशोरी लाल सम्मान (श्रृंगार रस की एक रचना पर), महादेवी वर्मा सम्मान (छायावादी रचना पर) **गद्य के क्षेत्र में**ः डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान (नाटक) उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान (कहॉनी/उपन्यास/लघु कथा) **हिन्दी सेवी सम्मान**-ऐसे व्यक्ति जो किसी भी प्रकार से हिन्दी सेवा कर रहे हों अथवा हिन्दी का प्रचार/प्रसार, हिन्दी के विकास के लिए कार्य कर रहे हों। **समाज सेवा के क्षेत्र में**ः समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-ऐसे व्यक्ति जो कम से कम गत 5 वर्षो से समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान दे रहे है. **कलाश्रीः** (कला/संस्कृति/लोकनृत्य/शास्त्रीय संगीत/अभिनय/संगीत/पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), **राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान**-(हिन्दी सेवा के साथ-साथ किसी अन्य क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए, प्रमाणिक विवरण) (युवाओं की उम्र 35 वर्ष से कम हो)

विशेषः

1. प्रविष्टि के साथ सम्बन्धित विधा की एक रचना, विवरण के सम्बंध में प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 100 रुपये मात्र का धनादेश/डाक टिकट आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 2.रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. प्रत्येक पृष्ठ पर अपने हस्ताक्षर अवश्य करें. 3. निर्णायंक मण्डल का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा. किसी प्रकार के विवाद के सदर्भ में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा. अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-

अंतिम तिथिः 30 नवम्बर 2017

अध्यक्ष,

पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास

65ए/2, लक्सों कंपनी के सामने, रामचन्द्र मिशन रोड,

धूमनगंज, इलाहाबाद-211011, उ.प्र. मो०: 09335155949,

ईमेल-psdiit@rediffmail.com

सोच और नजरिया बदलिए नजारे तो स्वतः बदल जाएंगे

-आशा त्रिपाठी

उच्च शिक्षित वर्ग और कॉरपोरेट कंपनियों में महिलाएँ चाहे जितनी शोहरत बटोर लें, लेकिन आज भी उन्हें वह महत्व नहीं मिलता, जिसकी वे हकदार हैं. देश के सर्वांगीण विकास में पुरूषों के साथ कदमताल करने वाली महिलाओं के साथ हर स्तर पर भेदभाव अब भी जारी है. यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि महिलाओं की भागीदारी समाज में हर स्तर पर बढ़ी हैं, फिर भी बहुसंख्यक महिलाएँ, जो कामगार हैं, उनके योगदान व उनकी आर्थिक उपादेयता का न तो सही तरीके से आकलन होता हैं और ना ही उन्हें वाजिब हक मिलता हैं. बड़े फलक पर भी देखें तो महिलाओं की बदौलत हम कई पैमानों पर आर्थिक विकास में सफल हुए हैं. कोई भी समाज महिला कामगारों द्वारा राष्ट्रीय आय में किये गए योगदान को दरकिनार नहीं कर सकता. बावजूद इसके, उनको पर्याप्त महत्व नहीं मिलता. हालॉकि, भारत के श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी दुनिया के मुकाबले काफी कम है, फिर भी घरेलू काम में महिलाओं की भागीदारी 75 फीसदी से अधिक हैं. यह सर्वव्यापी है कि ग्रामीण एवं शहरी दोनों इलाकों में महिलाओं की शिक्षा दर में बढ़ोतरी हुई है. ऑकड़े बताते हैं कि ग्रामीण इलाकों में 15 से 19 आयु वर्ग की लड़कियों में शिक्षा के प्रसार साथ श्रम क्षेत्र में उनकी भागीदारी घटी है. यह अच्छी बात है, लेकिन 20 से 24 की आयु सीमा की लड़कियों के ऑकड़े बताते हैं कि उनके द्वारा प्राप्त शिक्षा का लाभ उन्हें रोजगार में बहुत नहीं मिल पाया है. महिलाओं की क्षमता को लेकर समाज में व्याप्त धारणा का भी अहम योगदान होता हैं. देश की पितृसत्तात्मक व्यवस्था में आधुनिकता

के बावजूद कई स्तरों पर महिलाओं को उनका वाजिब हक नहीं मिल पाता. जब तक इस भेदभाव को दूर नही किया जाता, तब तक महिला-पुरूष बराबरी, सिर्फ किताबी बाते ही रह जाएँगी. महिलाओं के उत्थान के लिए चले तमाम अभियान व कार्यक्रमों के बावजूद महिला कल्याण की दिशा में आमूल-चूल परिवर्तन न होने के पीछे लोगों का दूषित दृष्टिकोण रहता है. प्रतीत होता है कि यदि महिलाओं के प्रति सोच और नजरिया बदले तो नजारे भी बदलते हुए दिखेंगे.

इस 21वीं सदी के सोलहवें वर्ष में भी महिलाओं के प्रति दूषित दृष्टिकोण रखा जाता है. बीते वर्ष की एक घटना याद आ रही है. भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएस) अधिकारी स्मिता सब्बरवाल तेलंगाना के मुख्यमंत्री कार्यालय में अतिरिक्त सचिव पद पर तैनात हुई. उनके प्रति राजनीतिक नेताओं और कुछ अधिकारियों की सोच इतनी गंदी थी, जिसकी जितनी भी निन्दा की जाए कम होगी. देश की एक चर्चित अंग्रेजी पत्रिका ने उनके बारे में तमाम तरह की नकारात्मक बातें छापीं. इस पर सब्बरवाल ने पत्रिका को मानहानी का कानूनी नोटिस भेज दिया. बकौल स्मिता सब्बरवाल, मुझे सबसे बुरा यह लगा कि एक पत्रिका जिसे लाखों लोग पढ़ते हैं, वह ऐसा सुझाए कि एक महिला अपनी खूबसूरती की वजह से अपने कॅरियर में आगे बढ़ पा रही है. सोशल मीडिया पर भी कई लोगों ने लेख की निंदा की थी. हालॉकि पत्रिका ने अपने लेख के साथ छापा कार्टून अपनी वेबसाइट से हटा लिया था. इस कार्टून में एक महिला को फैशन शो में हिस्सा लेते हुए दिखाया गया था. और कुछ नेताओं को बुरी नजर से महिला की तरफ घूरते हुए दिखाया गया था. लेख में ऑफिसर का नाम लिए बगैर लिखा था कि हमेशा साड़ी पहनने वाली महिला एक फैशन शो में पैंट और फ्रिल वाली टॉप में नजर आई, तो फोटो खीचने का

अच्छा मौका बना. 15 साल से आईएएस ऑफिसर स्मिता सबरवाल के मुताबिक यह ओछी पत्रकारिता की मिसाल है. यह महिला विरोधी सेक्सिस्ट सोच है, जो बदलते समाज में अब कम ही लोगों में बची है, पर पत्रिका इस पुरानी सोच को प्रकाशित कर बढ़ावा दे रही है. कई लोग इस तरह के आरोप लंबे समय से लगाते आए हैं कि कैरीयर मे आगे बढ़ने के पीछे एक महिला का काम नहीं बल्कि उसकी सुंदरता होती है. साड़ी की जगह पैंट-टॉप पहनने पर महिला को अलग नजर से भी देखा जाता रहा है. किंतु इस सोच को पुराना और रूढ़ीवादी बताने में महिलाओं का साथ अक्सर पत्रकारों ने ही दिया है. पुरूषों के प्रभुत्व वाले काम और उद्योगों में महिलाओं के आने पर लेख भी लिखे गए हैं.

उपरोक्त उदाहरण से यह सवाल उठता है कि क्या यह महिलावादी समझ महज सतही है? जानकारों का कहना है कि पत्रकारिता में सेक्सिस्ट लेखों और तस्वीरों को मिसालें अब भी आम हैं. इससे फर्क नहीं पड़ता कि संस्थान बड़ा है या छोटा या पत्रकार बड़े शहर में काम करता है या छोटे यह सोच अभी भी है. महिला की तारीफ एक जगह है और उसकी काबिलियत को कम ऑकना या सुंदरता के नाम पर दरकिनार कर देना दूसरी. कई लोग इसे बहुत महीन कहते हैं, पर एक बहुत साफ रेखा है, जो तारीफ की सीमाओं को बदतमीजी की हद में बदल देती है. फर्क नजरिए का है, रेखा के इस ओर या उस ओर. यह भी साफ है कि सफल कामकाजी पुरूषों के रूप-रंग पर ऐसी टिप्पणियॉ नही की जाती. शायद ही किसी लेख में उनके पहनावे को उनके कॅरियर से जोड़ा जाता हो. लबोलुआब यह है कि समाज की सोच को बदलने की जरूरत है.

चूँकि स्मिता सब्बरवाल देश के किसी मुख्यमंत्री कार्यालय में सचिव पद पर नियुक्त की जाने वाली पहली महिला आफिसर थी, उनके मुताबिक पुरूषों के वर्चस्व वाले काम में अपने लिए जगह बनाना भी उनके खिलाफ उपरोक्त तंज भरे लेख के पीछे की वजह हो सकती है. उन्होंने स्पष्ट कहा था कि मेरी यह उपलब्धि शायद कुछ पुरूषों को पसंद नही आई हो, पर पत्रिका को मेरे काम के बारे में जानकारी जुटाए बिना ऐसी बातों को जगह देना निंदनीय है. बताते हैं कि जेनेवा स्थित वर्ल्ड इकॉनोमिक फोरम के वार्षिक जेंड़र गैंप इंडेक्स के अनुसार, भारत 142 देशों की सूची में 13 स्थान से गिरकर 114 वे नंबर पर पहुँच गया. बीते वर्ष वह 136 देशों की सूची में 101 वे स्थान पर था. यह सर्वे स्वास्थ्य, शिक्षा, आर्थिक भागीदारी और राजनीतिक सहभागिता के मापदंड़ों पर महिलओं की स्थिति को मापता है. भारत शिक्षा, आमदनी, श्रम बाजार में भागीदारी और बाल मृत्यु दर के मामले में इस सूची के अंतिम 20 देशों में शामिल है. पुरूषों और महिलाओं के बीच सबसे ज्यादा समानता नॉर्वे आईसलैंड़, फिनलैंड़, स्वीड़न और डेनमार्क जैसे उत्तरी यूरोप के देशों में पाई गई है. अमेरिका में महिलाओं की स्थिति पहले से बेहतर हुई है. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि महिलाओं के प्रति दूषित नजरिया और भेदभाव वाला दृष्टिकोण निरक्षरता के अंधेरे में ही तेजी से पनपते हैं. इसलिए जरूरत इस बात की है कि शिक्षा व्यवस्था का सुदृढ़ कर महिलाओं के प्रति लोगों की सोच का परिमार्जित किया जाए. निश्चित रूप से जब नजरिया बदलेगा तो नजारे भी बदले हुए दिखेंगे. कहा जाता है कि 'जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि'

उपयोगी जानकारी

अगर रेल यात्रा में आपका सामान चोरी हो जाए, तो..?

-कुलभुषण शुक्ला

लखनऊ से जबलपुर लौटते वक्त ए.सी. कोच में जबलपुर की एक महिला प्रोफेसर का पर्स चोरी हो गया, जिसमें लाखों के जेवर और रुपए थे. अब तक उस सामान का पता नहीं लग सका है. चोरी गए सामान की कीमत अब रेलवे को देनी होगी.

सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश ने रेल यात्रियों को यह सुविधा दिला दी है. इसके लिए पीड़ित यात्री को उपभोक्ता फोरम में रेलवे की सेवा में कमी का मामला दायर करना होगा.

राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के मुताबिक रिजर्व कोच में अनाधिकृत व्यक्ति का प्रवेश रोकना टी.टी.ई. की जिम्मेदारी है और अगर वह इसमें नाकाम रहता है, तो रेलवे सेवा में खामी मानी जाएगी.

कैसे मिला अधिकारः फरवरी 2014 में राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने ट्रेन से चोरी गए महिला डाक्टर के सामान की राशि का भुगतान रेलवे को करने का आदेश दिया. रेलवे ने इस पर दलील दी की 'ये मामला रेलवे क्लेम टिब्यूनल में ही सुना जा सकता है.' जबकि यात्री के वकील के मुताबिक ट्रिब्यूनल में सिर्फ रेलवे में बुक पार्सल के मामलों को ही सुना जाता है.

न्यायमूर्ति सी.के. प्रसाद और पिनाकी चंद्र घोष की पीठ ने 17 साल पुराने इस मामले में रेलवे की दलील को खारिज कर दिया और राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग के फैसले में दखल देने से इंकार कर दिया.

यह अधिकार यात्रियों के लिए जितना सुविधाजनक है, उतना ही रेलवे और पुलिस के लिए मुश्किल भरा. इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि इसकी जानकारी यात्रियों को नहीं है और न ही इस जानकारी को उन तक पहुंचाने के लिए कोई कारगर कदम उठाए गए हैं.

ट्रेन में चोरी होने के बाद रिपोर्ट दर्ज कराते वक्त पीड़ित को इस बारे में पुलिस द्वारा जानकारी नहीं दी जाती.

हालांकि जबलपुर जी.आर.पी. का कहना है कि 1 अप्रैल, 2014 के बाद यह आदेश जारी हुआ और 6 माह बाद यानि सितम्बर से अब तक एक भी मामले नहीं आए.

इंतजार चोरी गए सामान को तलाशने के लिए जी.आर.पी. के पास 6 माह का वक्त होगा. इस दरमियान यदि पुलिस पीड़ित का सामान नहीं तलाश पाती तो वह उपभोक्ता फोरम जा सकता है. इसके लिए एफ.आई.आर. दर्ज कराते समय पुलिस को पीड़ित से उपभोक्ता फोरम फार्म भरवाना होगा.

ओरिजनल कापी पीड़ित के पास होगी और पुलिस कार्बन कापी अपने पास रखेगी. एफ.आई.आर. और फार्म ही यात्री का मूल दस्तावेज होगा, जिसके आधार वह केस दर्ज कराएगा. यह सुविधा सिर्फ स्लीपर या ए.सी. कोच में रिजर्वेशन कराने वाले यात्रियों के लिए है.

उपभोक्ता फोरम के जानकार एडवोकेट बताते हैं कि रिजर्वेशन के दौरान यात्री से 2 रुपए सुरक्षा शुल्क लिया जाता है. इधर ट्रेन में स्लीपर कोच यात्री को दिया जाता है, जिसके बाद यह तय होता है कि आपने उसे ट्रेन में सोने का अधिकार दिया है और इस दौरान जो भी घटना होती है, उसका जिम्मेदार रेलवे ही होगा. ट्रेन के स्लीपर या एसी कोच में यात्रा करते समय यात्री का सामान चोरी होता है, तो शिकायत दर्ज करते वक्त उससे उपभोक्ता फोरम का फार्म भरवाया जाता है. यदि 6 माह तक पुलिस उसका सामान नहीं तलाश पाती तो वह फार्म की कापी ले जाकर उपभोक्ता फोरम में मामला दर्ज कर सकता है, जहां पर रेलवे को पीड़ित का हर्जाना देना होगा.

बचे परिवर्तन के दंभ से

हमें लगता है कि संसार में बहुत कुछ सही नहीं चल रहा है. हमें अपने मित्रों में बुराई, परिवार में अनेक खामियां नजर आती हैं और प्रतीत होता है कि यदि मैं घर, गांव, राज्य का मुखिया, देश का प्रधानमंत्री होता तो ऐसा करता. हमारे पास ढेरों सुझाव होते हैं जो दूसरों के लिए उपयोगी समझते हैं और चाहते हैं कि लोग उनके विचारों और सुझावों पर काम करें; जिन पर स्वयं उन्होंने कोई काम नहीं किया है.

-संतोष गौड़ 'राष्ट्रप्रेमी'
साउथ वेस्ट गारो हिल्स, मेघालय

संसार में सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि कोई भी व्यक्ति अपनी स्थिति से संतुष्ट नहीं है. अधिकांश व्यक्ति असंतुष्टि के साथ जीते हैं. हमारे आसपास की सभी व्यवस्थाएं हमें अधूरी या अपूर्ण लगती हैं. हम कितने भी अज्ञानी या ज्ञानवान हों, हमें लगता है कि संसार में बहुत कुछ सही नहीं चल रहा है. इसे बदलने की आवश्यकता है. हमें अपने मित्रों में बुराई नजर आती हैं, उनके कार्य व व्यवहार में सुधार करने की अनेक संभावनाएं नजर आती है. परिवार में अनेक खामियां नजर आती हैं और प्रतीत होता है कि यदि मैं घर का मुखिया होता तो ऐसा करता. मैं गाँव का प्रधान होता तो ऐसा करता, मैं राज्य का मुखिया होता तो ऐसा करता या मैं देश का प्रधानमंत्री होता तो ऐसा करता. हमें सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था में अनेकों खामियां नजर आती हैं. अधिकांश व्यक्तियों के पास ढेरों सुझाव होते हैं, वे अपने सुझावों को दूसरों के लिए उपयोगी समझते हैं और चाहते हैं कि लोग उनके उन विचारों और सुझावों पर काम करें; जिन पर स्वयं उन्होंने कोई काम नहीं किया है.

असंतुष्टि के भी दो पहलू होते हैं. असंतुष्टि ही उद्यमिता को जन्म देती है. असंतुष्टि ही कार्य करने के लिए प्रेरित कर विकास का आधार बनती है तो दूसरी ओर असंतुष्टि ही निराशा से अवसाद व अपराध की ओर कदम बढ़ाती हैं. कई बार व्यक्ति असंतुष्टि से उपजे अवसाद के कारण आत्महत्या तक कर लेता है. वस्तुतः यह व्यक्ति के ऊपर निर्भर है कि वह असंतुष्टि को किस प्रकार लेता है. असंतुष्टि विकास का आधार बनती है. यदि हम वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हो गये तो विकास कैसे करेंगे? प्रसिद्ध गजलकार दुष्यन्त कुमार की भाषा में-

न हो कमीज तो पैरों से पेट ढक लेंगे।
ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए।।

वास्तविक रूप से विकास के पथ के लिए संतुष्ट हो जाने की प्रवृत्ति किसी भी प्रकार से उचित नहीं कही जा सकती. असंतुष्टि से ही संतुष्टि प्राप्त करने के लिए विकास पथ मिलता है. व्यक्ति असंतुष्टि से संतुष्टि प्राप्त करने के लिए ही जीवन भर कर्मो में लीन रहता है.

असंतुष्टि का दूसरा पहलू निराशा से अवसाद की ओर ले जाकर आत्महत्या तक का सफर है. इससे निजात पाने के लिए भारतीय आध्यात्म दर्शन अचूक औषधि है. जब व्यक्ति अपनी स्थिति को भाग्य मानकर स्वीकार कर लेता है, तब असंतुष्टि का स्वयं ही शमन हो जाता है. मलूकदास का मंत्र अवसाद से बचने का सबसे अच्छा साधन है-

अजगर करे न चाकरी, पक्षी करे न काम।
दास मलूका कह गये, सबके दाता राम।।

इस प्रवृत्ति को स्वीकार कर लेने से किसी प्रकार की असंतुष्टि का प्रश्न ही नहीं उठता. व्यक्ति जैसा भी है, जहाँ भी है, वहीं संतुष्टि प्राप्त कर लेता है. ऐसी स्थिति में विकास के पथ की कल्पना ही नहीं की जा सकती. विकास के पथिक को तो दुष्यन्त कुमार के संदेश पर ही आगे बढ़ना होगा-

कौन कहता है आकाश में सुराक नहीं हो सकता?
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

असंतुष्ट होकर विकास के पथिक बहुत कुछ करना चाहते हैं. वे क्रांतिकारी परिवर्तन के राही होते हैं. केवल भौतिक विकास ही नहीं सामाजिक क्षेत्र, राजनीतिक क्षेत्र सहित सभी क्षेत्रों में परिवर्तन का बिगुल बजाने वालों की भी कोई कमी नहीं है. वे लोग चाहते हैं कि सभी कुछ रातों रात बदल जाय और सब कुछ उनकी इच्छानुसार चले. किशोरावस्था और युवावस्था में परिवर्तन करने के असीम सपने होते हैं. पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक सभी क्षेत्रों में क्रांतिकारी परिवर्तन करने का आह्वान करने वाले व्यक्तियों की फौज आपको अपने आसपास पर्याप्त

मात्रा में मिल जायेगी. परिवर्तन के ऐसे यौद्धाओं की बहुलता है, जो संपूर्ण समाज को अपने अव्यावहारिक सिद्धांतों के अनुसार बदलने की कामना करते हैं किंतु अपने आपको उन सिद्धांतों के अनुकूल नहीं समझते. कहने का मतलब वे दुनिया को बदलना चाहते हैं किंतु स्वयं अपने आप को बदलने को तैयार नहीं होते. दूसरों से ईमानदारी की अपेक्षा करते हैं किंतु स्वयं अपने आपको उस मार्ग पर चलने में असमर्थ पाते हैं. मुझे हँसी आती है, अरे भाई! जो सिद्धांत आप दूसरों को बता रहे हो; पहले उसको अपने व्यवहार में लाकर उसकी सत्यता और व्यावहारिकता तो सिद्ध करो. तभी तो दूसरे लोग आपकी बातों को सुनने को तैयार होंगे.

ऐसा नहीं है कि सभी लोग दूसरों से ही परिवर्तन करने की अपेक्षा करते हैं. आपको ऐसे उत्साही व्यक्तियों के भी दर्शन हो जायेंगे जो घर फूँक तमाशा देखने को भी तैयार रहते हैं. वे सोचते हैं कि वे जो चाहे कर सकते हैं. वे संपूर्ण दुनिया को बदलकर एक आदर्श व सुंदर दुनिया में परिवर्तित कर सकते हैं. किंतु यह यथार्थ से कोसों दूर है. संसार में कोई किसी को भी बदल नहीं सकता. हम केवल अपने आपको बदल सकते हैं. हम अपने आपको ईमानदार बना सकते है किंतु दूसरे को नहीं. ईमानदारी अपने अंदर से विकसित होती है कोई भी बाहरी शक्ति किसी को ईमानदार नहीं बना सकती. हम दूसरों को तो क्या अपने विद्यार्थियों और अपनी संतानों को ईमानदार नहीं बना पाते. दुनिया को बदलने की तो बात ही क्या है? वास्तव में दुनिया को बदलना किसी भी व्यक्ति के वश की बात नहीं. व्यक्ति बदल सकता है किंतु सृष्टि नहीं. अतः हमें परिवर्तन करने के दंभ से बचना होगा. दुनिया को बदलने के दंभ में हम अपने आपको बदल सकने के अवसर को भी गंवा सकते हैं.

कोई किसी को भी बदल नहीं सकता. हम केवल अपने आपको बदल सकते हैं. वास्तव में दुनिया को बदलना किसी भी व्यक्ति के वश की बात नहीं. व्यक्ति बदल सकता है किंतु सृष्टि नहीं. अतः हमें परिवर्तन करने के दंभ से बचना होगा.

राजस्थान में सेवाकाल के दौरान एक साथी शिक्षक श्री गजेंद्र जोशी एक कहानी सुनाया करते थे. वह यथार्थ का चित्रण करती है. जोशी जी के अनुसार- एक राजा अपने सेनापति और महामंत्री के साथ भ्रमण पर निकले. भ्रमण करते हुए राजा को एक स्थान बड़ा मनोरम लगा. राजा को ख्याल आया कि इस स्थान पर एक तालाब का निर्माण किया जाय जिसमें दूध भरा हो तो कितना अद्भुत दृश्य होगा! उसने सोचा, एक सुन्दर तालाब का निर्माण करके अपने राज्य के सभी ग्वालों को कहा जाय कि वे भोर की वेला में एक बार दूध तालाब में डालें. राज्य में इतने ग्वाले हैं कि तालाब दूध से भर जायेगा जो संपूर्ण दूनिया में अनुपम होगा. राजा ने अपना विचार महामंत्री व सेनापति के सामने रखा. सेनापति को तो आज्ञापालन की शिक्षा मिली थी. उसे क्या बोलना था. महामंत्री ने हाथ जोड़कर विनती की, 'महाराज! तालाब बनाने का विचार अत्युत्तम है किंतु महाराज तालाब दूध का नहीं, पानी का होता है.' राजा ने महामंत्री की तरफ कड़ाई से देखते हुए कहा, 'नहीं, महामंत्री. हमारे राज्य का तालाब अनूठा होगा. हमने निर्णय ले लिया है. राजाज्ञा का पालन सुनिश्चित करिये.'

राजकोष से पर्याप्त धन जारी करते हुए बड़े ही सुन्दर तालाब का निर्माण कराया गया. संध्याकाल में पूरे राज्य में मुनादी करवा दी गई जिसके अनुसार राज्य के सभी ग्वालों को आदेश दिया गया कि प्रातःकाल भोर होने से पूर्व सभी ग्वाले अपना-अपना दूध तालाब में भर दें. दूसरे दिन भोर होने से पूर्व ही एक ग्वाला आया. उसने सोचा सभी तो दूध डालेंगे ही, यदि मैं दूध के स्थान पर पानी डाल दूँ तो क्या फर्क पड़ेगा और क्या किसी को पता चलेगा? इसी प्रकार सभी ग्वाले आये और सभी ने उसमें चुपके से पानी डाल दिया.

सुबह राजा अपने महामंत्री और सेनापति के साथ तालाब का निरीक्षण करने निकले. तालाब को देखकर वे आश्चर्यचकित रह गये और आग बबूला हो उठे. तालाब एकदम साफ और स्वच्छ निर्मल जल से लबालब था. राजा संपूर्ण ग्वाला समाज को दण्डित करने की घोषणा करने वाले ही थे कि महामंत्री हाथ जोड़कर खड़े हो गये और बोले, दुहाई है अन्नदाता की. मैंने पूर्व में भी प्रार्थना की थी कि तालाब तो पानी का ही होता है. महाराज प्रकृति के विरुद्ध व्यवस्थाएँ नहीं चलाई जा सकती. राजा समझ गया और मुस्कराकर रह गया.

यह बड़ी ही शिक्षाप्रद कहानी है. परिवर्तन के कितने भी प्रयास किये

जायँ किंतु दुनिया नहीं बदल सकती. दुनिया में सभी रंग हैं. यह विविध रंगों से परिपूर्ण है. इसमें सभी गुण है तो सभी अवगुण भी हैं. दुनिया तो क्या संसार में कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा जिसमें कोई अवगुण न निकाला जा सके और न ही ऐसा व्यक्ति मिलेगा जिसमें कोई गुण न हो. दुनिया में ईमानदारी भी है और बेईमानी भी; सत्य है और असत्य भी; सदाचार भी है और दुराचार भी; सज्जनता भी है और दुष्टता भी. दुनिया विविधता पूर्ण रंग बिरंगी है जिसमें सभी रंग हैं और सदैव रहेंगे. किसी भी रंग को नष्ट करना संभव नहीं. हाँ! मात्रा को कम या अधिक किया जा सकता है. हम अपने लिए रंगों का चुनाव कर सकते हैं किंतु अन्य रंगों को दुनिया से समाप्त नहीं कर सकते.

जब हमारा राजनीतिक नेतृत्व अपराध मुक्त शासन देने की बात करता है तो वह असंभव बात कह रहा होता है. किसी भी स्थिति में अपराध को समाप्त नहीं किया जा सकता. हाँ! अपराध को कम किया जा सकता है. शासन की लापरवाही और कानून व्यवस्था की लापरवाही से अपराध बढ़ सकते हैं और अधिक सक्रिय और सावधान रहकर अपराध कम किये जा सकते हैं. किंतु अपराधों को सिरे से समाप्त करना संभव नहीं. यह प्रकृति के खिलाफ है. प्रकृति में से किसी भी रंग को समाप्त नहीं किया जा सकता. इसी प्रकार भ्रष्टाचार मुक्त शासन का दंभ भी खोखला ही साबित होगा. भ्रष्टाचार को समाप्त करना भी असंभव है. हाँ! श्रेष्ठ कानून व्यवस्था और चुस्त दुरुस्त

प्रशासन की सहायता से भ्रष्टाचार कम किया जा सकता है. कोई व्यक्ति कितना भी सक्षम हो, वह अपने आप को ईमानदार बना सकता है किंतु अन्य सभी लोगों को ईमानदार नहीं बना सकता. हो सकता है कि कुछ लोग मजबूरी में ईमानदार होने का दिखावा करें किंतु अवसर पाते ही वे अपने पुराने रंग में वापस आ जाते हैं. अतः परिवर्तन के प्रयास करना अच्छी बात है किंतु दूसरों को बदलने का दंभ पालना किसी भी प्रकार उचित नहीं है. राम, कृष्ण, ईसा और मुहम्मद पैगम्बर जैसे महापुरूष संसार से बुराइयों को जड़ से नहीं मिटा सके. उन्होंने अपने प्रयास किए उनके तात्कालिक परिणाम भी निकले. उनके कार्यो के लिए ही हम आज भी उन्हें याद करते हैं. किंतु बुराइयों का उन्मूलन न तो हुआ और न संभव है हाँ! बुराइयों पर नियंत्रण के लिए अविरल प्रयास करते रहने की आवश्यकता है. वे प्रयास सदैव किए जाते रहेंगे. अच्छाई और बुराई का संघर्ष सदैव चलता रहा है, अभी भी चल रहा है और सदैव चलता रहेगा. हमें केवल अपने पक्ष का निर्धारण करना है. हिंदु धर्म ग्रन्थों में इसे देव और असुरों का संघर्ष कहा गया है तो अन्य धर्म ग्रन्थों में भी विभिन्न नामों से सम्मिलित किया गया है.

आंधी रात

-काव्य संग्रहः

रचनाकारः

डॉ०निगम प्रकाश कश्यप

प्रकाशकः

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद

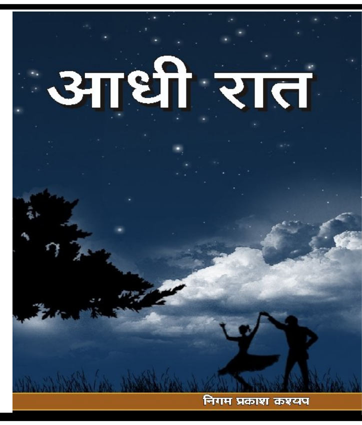

काव्य धारा द्वितीय

-सहयोगी संकलन

सम्पादकः

डॉ०विजय कुमार पटीर

प्रकाशकः

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद

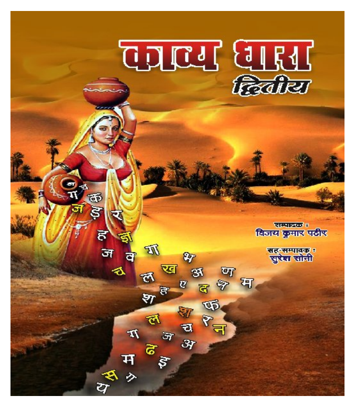

शीघ्र प्रकाश्य **शीघ्र प्रकाश्य**

बुद्धम हिन्दी व्याकरण

लेखकः विजय कुमार पटीर

सुखी रहने का तरीका

-सत्यव्रत मिश्रा,
इलाहाबाद, उ०प्र०

एक बार की बात है संत तुकाराम अपने आश्रम में बैठे हुए थे. तभी उनका एक शिष्य, जो स्वाभाव से थोड़ा क्रोधी था उनके समक्ष आया और बोला- गुरूजी, आप कैसे अपना व्यवहार इतना मधुर बनाये रहते हैं, ना आप किसी पे क्रोध करते हैं और ना ही किसी को कुछ भला-बुरा कहते हैं? कृपया अपने इस अच्छे व्यवहार का रहस्य बताइए?'

संत बोले- मुझे अपने रहस्य के बारे में तो नहीं पता, पर मैं तुम्हारा रहस्य जानता हूँ!

'मेरा रहस्य! वह क्या है गुरु जी?' शिष्य ने आश्चर्य से पूछा-

'तुम अगले एक हफ्ते में मरने वाले हो!' संत तुकाराम दुखी होते हुए बोले।

कोई और कहता तो शिष्य ये बात मजाक में टाल सकता था, पर स्वयं संत तुकाराम के मुख से निकली बात को कोई कैसे काट सकता था? शिष्य उदास हो गया और गुरु का आशीर्वाद ले वहां से चला गया. उस समय से शिष्य का स्वभाव बिलकुल बदल सा गया. वह हर किसी से प्रेम से मिलता और कभी किसी पे क्रोध न करता, अपना ज्यादातर समय ध्यान और पूजा में लगाता. वह उनके पास भी जाता जिससे उसने कभी गलत व्यवहार किया था और उनसे माफी मांगता. देखते-देखते संत की भविष्यवाणी को एक हफ्ते पूरे होने को आया. शिष्य ने सोचा चलो एक आखिरी बार गुरु के दर्शन कर आशीर्वाद ले लेते हैं. वह उनके समक्ष पहुंचा और बोला-' गुरुजी, मेरा समय पूरा होने वाला है, कृपया मुझे आशीर्वाद दीजिये!'

'मेरा आशीर्वाद हमेश तुम्हारे साथ है पुत्र. अच्छा, ये बताओ कि पिछले सात दिन कैसे बीते? क्या तुम पहले की तरह ही लोगों से नाराज हुए, उन्हें अपशब्द कहे?' संत तुकाराम ने प्रश्न किया.

'नहीं-नहीं, बिलकुल नहीं. मेरे पास जीने के लिए सिर्फ सात दिन थे, मैं इसे बेकार की बातों में कैसे गँवा सकता था?

मैं तो सबसे प्रेम से मिला, और जिन लोगों का कभी दिल दुखाया था उनसे क्षमा भी मांगी-शिष्य तत्परता से बोला.

संत तुकाराम मुस्कुराए और बोले, 'बस यही तो मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है.' मैं जानता हूँ कि मैं कभी भी मर सकता हूँ, इसलिए मैं हर किसी से प्रेमपूर्ण व्यवहार करता हूँ, और यही मेरे अच्छे व्यवहार का रहस्य है.

शिष्य समझ गया कि संत तुकाराम ने उसे जीवन का यह पाठ पढ़ाने के लिए ही मृत्यु का भय दिखाया था.

वास्तव में हमारे पास भी सात दिन ही बचें हैं, रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि, आठवां दिन तो बना ही नहीं है.

1- जो गुजर गया उसके बारे में मत सोचो और भविष्य के सपने मत देखो, केवल वर्तमान पे ध्यान केंद्रित करो.

2- आप पूरे ब्रह्माण्ड में कहीं भी ऐसे व्यक्ति को खोज लें जो आपको आपसे ज्यादा प्यार करता हो, आप पाएंगे कि जितना प्यार आप खुद से कर सकते हैं उतना कोई आपसे नहीं कर सकता.

3—स्वास्थ्य सबसे बड़ा उपहार है, संतोष सबसे बड़ा धन और विश्वास सबसे अच्छा संबंध.

4— हमें हमारे अलावा कोई और नहीं बचा सकता, हमें अपने रास्ते पे खुद चलना है।

5- तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुपी रह सकतीं-सूर्य, चन्द्रमा और सत्य.

6— आपका मन ही सब कुछ है, आप जैसा सोचेंगे वैसा बन जायेंगे.

7- अपने शरीर को स्वस्थ रखना भी एक कर्तव्य है, तभी हम अपने मन को अच्छा रख पाएंगे.

8- हम अपनी सोच से ही निर्मित होते हैं, जैसा सोचते हैं वैसे ही बन जाते हैं। जब मन शुद्ध होता है तो खुशियाँ परछाई की तरह आपके साथ चलती हैं.

9- किसी परिवार को खुश, सुखी और स्वस्थ रखने के लिए सबसे जरुरी है- अनुशासन और मन पर नियंत्रण. अगर कोई व्यक्ति अपने मन पर नियंत्रण कर ले तो उसे आत्मज्ञान का रास्ता मिल जाता है.

10- क्रोध करना एक गर्म कोयले को दूसरे पे फेंकने के समान है, जो पहले आपका ही हाथ जलाएगा.

11- जिस तरह एक मोमबत्ती की लौ से हजारों मोमबत्तियों को जलाया जा सकता है, फिर भी उसकी रौशनी कम नहीं होती उसी तरह एक दूसरे से खुशियाँ बांटने से कभी खुशियाँ कम नहीं होतीं.

12- इंसान के अंदर ही शांति का वास होता है, उसे बाहर ना तलाशें.

13- आपको क्रोधित होने के लिए दंड नहीं दिया जायेगा, बल्कि आपका क्रोध खुद आपको दंड देगा.

14— अपनी स्वयं की क्षमता से काम करो, दूसरों पर निर्भर मत रहो.

ॐ नमः शिवाय

हिन्दीतर भाषी रचनाकारः

भाग-4

दक्ष और सती

-**विजय कुमार सम्पत्ति,**
सिकंदराबाद, तेलांगना

पूर्व काल में, समस्त महात्मा मुनि प्रयाग में एकत्रित हुए, वहां पर उन्होंने एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया. उस यज्ञ में तीनों लोको के समस्त ज्ञानी-मुनिजन, देवर्षि, सिद्ध गण, प्रजापति इत्यादि सभी आये. भगवान शिव भी उस यज्ञ आयोजन पर पधारे थे, उन्हें आया हुए देख वहां पर उपस्थित समस्त गणो ने उन्हें प्रणाम किया. इसके पश्चात वहां पर दक्ष प्रजापति आये, उन दिनो वे तीनो लोको के अधिपति थे, इस कारण सभी के सम्माननीय थे. परन्तु अपने इस गौरवपूर्ण पद के कारण उन्हें बड़ा अहंकार भी था. उस समय उस अनुष्ठान में उपस्थित सभी ने नतमस्तक होकर उन्हें प्रमाण किया, परन्तु भगवान शिव ने उनके सम्मुख मस्तक नहीं झुकाया, वे अपने आसन पर बैठे रहे. इस कारण दक्ष मन ही मन उन पर अप्रसन्न हुए, उन्हें क्रोध आ गया तथा बोले 'सभी देवता, असुर, ब्राह्मण इत्यादि मेरा सत्कार करते हैं, मस्तक झुकाते हैं, परन्तु वह दुष्ट भूत-प्रेतों का स्वामी, श्मशान में निवास करने वाला शिव, मुझे क्यों नहीं प्रणाम करते? इसके वेदोक्त कर्म लुप्त हो गए हैं, यह भूत और पिशाचों से सेवित हो मतवाला बन गया हैं तथा शास्त्रीय मार्ग को भूल कर, नीति-मार्ग को सर्वदा कलंकित किया करता हैं. इसके साथ रहने वाले गण पाखंडी, दुष्ट, पापाचारी होते हैं, स्वयं यह स्त्री में आसक्त रहने वाला तथा रति-कर्म में ही दक्ष हैं. यह रुद्र चारों वर्णों से पृथक तथा कुरूप हैं, इसे यज्ञ से बहिष्कृत कर दिया जाए. यह श्मशान में वास करने वाला तथा उत्तम कुल और जन्म से हीन हैं, देवताओं के साथ यह यज्ञ का भाग न पाएं.'

दक्ष के कथन का अनुसरण कर भृगु आदि बहुत से महर्षि, शिव को दुष्ट मानकर उनकी निंदा करने लगे. दक्ष की बात सुनकर नंदी को बड़ा क्रोध आया तथा दक्ष से कहा! 'दुर्बुद्धि दक्ष! तूने मेरे स्वामी को यज्ञ से बहिष्कृत क्यों किया? जिनके स्मरण मात्र से यज्ञ सफल और पवित्र हो जाते हैं, तूने उन शिव जी को कैसे श्राप दे दिया? ब्राह्मण जाति की चपलता से

प्रेरित हो तूने इन्हें व्यर्थ ही श्राप दे दिया हैं, वे सर्वथा ही निर्दोष हैं.'

नंदी द्वारा इस प्रकार कहने पर दक्ष क्रोध के मारे आग-बबूला हो गया तथा उनके नेत्र चंचल हो गए और उन्होंने रुद्र गणो से कहा! 'तुम सभी वेदों से बहिष्कृत हो जाओ, वैदिक मार्ग से भ्रष्ट तथा पाखण्ड में लग जाओ तथा शिष्टाचार से दूर रहो, सिर पर जटा और शरीर में भस्म एवं हड्डियों के आभूषण धारण कर मद्यपान में आसक्त रहो.'

इस पर नंदी अत्यंत रोष के वशीभूत हो गए और दक्ष को तत्काल इस प्रकार कहा, 'तुझे शिव तत्व का ज्ञान बिलकुल भी नहीं हैं, भृगु आदि ऋषियों ने भी महेश्वर का उपहास किया हैं. भगवान रुद्र से विमुख तेरे जैसे दुष्ट ब्राह्मणों को मैं श्राप देता हूँ! सभी वेद के तत्व ज्ञान से शून्य हो जाये, ब्राह्मण सर्वदा भोगो में तन्मय रहें तथा क्रोध, लोभ और मद से युक्त हो निर्लज्ज भिक्षुक बने रहें, दरिद्र रहें. सर्वदा दान लेने में ही लगे रहे, दूषित दान ग्रहण करने के कारण वे सभी नरक-गामी हो, उनमें से कुछ ब्राह्मण ब्रह्म-राक्षस हो. शिव को सामान्य समझने वाला दुष्ट दक्ष तत्व ज्ञान से विमुख हो जाये. यह आत्मज्ञान को भूल कर पशु के समान हो जाये तथा दक्ष धर्म-भ्रष्ट हो शीघ्र ही बकरे के मुख से युक्त हो जाये.'

क्रोध युक्त नंदी को भगवान शिव ने समझाया, 'तुम तो परम ज्ञानी हो, तुम्हें क्रोध नहीं करना चाहिये, तुमने व्यर्थ ही ब्राह्मण कुल को श्राप दे डाला. वास्तव में मुझे किसी का श्राप छु नहीं सकता है. तुम्हें व्यर्थ उत्तेजित नहीं होना चाहिये. वेद मंत्राक्षरमय और सूक्तमय हैं, उसके प्रत्येक सूक्त में

देहधारियों के आत्मा प्रतिष्ठित हैं, किसी की बुद्धि कितनी भी दूषित क्यों न हो वह कभी वेदों को श्राप नहीं दे सकता हैं. तुम सनकादिक सिद्धो को तत्व-ज्ञान का उपदेश देने वाले हो, शांत हो जाओ.'

इस के पश्चात एक और ऐसी घटना घटी जिसके कारण दक्ष के हृदय में भगवान शिव के प्रति बैर और विरोध पैदा हो गया. जिसने दक्ष को और दुःखी कर दिया. कल्प के आदि में शिव जी के द्वारा, दक्ष के पिता ब्रह्मा जी का एक मस्तक कट गया था, वे पांच मस्तकों से युक्त थे, अतः शिव जी को दक्ष ब्रह्म हत्या का दोषी मानते थे. ये भी एक कष्ट देने वाली बात थी दक्ष के लिए!

यज्ञ शाला से आने के पश्चात प्रजापति दक्ष शिव द्वारा अपने पिता ब्रह्म देव का मुख काटकर किये गए अपमान और यज्ञ शाला में स्वयं के हुवे अपमान को याद कर ईर्ष्या और वैमनस्य भाव से मन ही मन भगवान शिव को नीचा दिखाकर अपमानित करने पर विचार करने लगे.

और जब बाकी सारी कन्याओं का विवाह हुआ तो दक्ष को सती के विवाह की चिंता शुरू हुई. उन्हें ध्यान आया कि यह साक्षात् भगवती आदि शक्ति हैं इन्होंने पूर्व से ही किसी और को पति बनाने का निश्चय कर रखा हैं. परन्तु दक्ष ने सोचा कि शिव जी के अंश से उत्पन्न रुद्र उनके आज्ञाकारी हैं, उन्हें ससम्मान बुलाकर मैं अपनी इस सुन्दर कन्या को कैसे दे सकता हूँ.

इस बीच दक्ष के महल में तुलसी विवाह उत्सव पर तुलसी और भगवान सालिगराम के विवाह का आयोजन किया जाता है. जिसमें सती रंगोली में शिव की आकृति बना देती है और उसमे खो जाती है. जिसे देख प्रजापति दक्ष झल्ला उठते है. राजकुमारी सती को उनकी शिव भक्त दासी शिव की महिमा के बारे में बताती है. सती द्वारा फेंका गया रुद्राक्ष पुनः महल के कक्ष में मिलता है. सती उसे फल समझ अपने पास रख लेती है. असुर सम्राट के आदेश पर राक्षस सती को मरने का हर सम्भव प्रयास करते है. देवताओं के आग्रह पर भगवान शिव सती की रक्षा के लिए सती के समक्ष प्रकट होते है दैत्यों से सती की रक्षा करते है. शिव को देख सती शिवमय हो जाती है. सती शिव से जुड़ाव सा महसूस करने लगती है. भगवान शिव अंतर्ध्यान हो गए. सती महल में आ अपनी शिव भक्त दासी से भगवान शिव से उनके मिलने की बात कहती है.

इस तरह से माता सती, भगवान शिव के प्रेम में आसक्त हो कर उचित समय की प्रतीक्षा करने लगती है.

लम्बत्स पिङ्गल जटा मुकुटोत्कटाय,
दंष्ट्राकरालविकटोत्कटभैरवाय।
व्याघ्राजिनाम्बरधराय मनोहराय,
त्रिलोकनाथनमिताय नमः शिवाय।।४।।

जो लटकती हुई पिङ्गवर्ण जटाओं के सहित मुकुट धारण करने से जो उत्कट जान पड़ते हैं तीक्ष्ण दाढ़ों के कारण जो अति विकट और भयानक प्रतीत होते हैं, साथ ही व्याघ्रचर्म धारण किए हुए हैं तथा अति मनोहर हैं, तथा तीनों लोकों के अधिश्वर भी जिनके चरणों में झुकते हैं, उन शिव जी को नमस्कार करता हूँ.

क्रमशः

आवश्यकता है

1996 से निरन्तर प्रकाशित विश्व स्नेह समाज मासिक को देश के विभिन्न शहरों में

■संवाददाता ■ब्यूरो प्रमुख, ■ विज्ञापन प्रतिनिधियों

की जवाबी लिफाफे के साथ लिखेंः

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें

प्रसार सचिव

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,

एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ई–मेलः sahityaseva@rediffmail.com मो०:9335155949

ये आग कब बुझेगी

सब एक समान है

एक बड़े देश के राष्ट्रपति के शयनकक्ष की खिड़की सड़क की ओर खुलती थी. रोज़ाना हज़ारों आदमी और वाहन उस सड़क से गुज़रते थे. राष्ट्रपति इस बहाने जनता की परेशानी और दुःख-दर्द को निकट से जान लेते.

राष्ट्रपति ने एक सुबह खिड़की का परदा हटाया. भयंकर सर्दी. आसमान से गिरते रुई के फाहे. दूर-दूर तक फैली सफेद चादर. अचानक उन्होनें देखा कि बेंच पर एक आदमी बैठा है ठंड से सिकुड़ कर गठरी सा होता हुआ. राष्ट्रपति ने पीए को कहा-उस आदमी के बारे में जानकारी लो और उसकी जरूरत पूछो.

दो घंटे बाद पीए ने राष्ट्रपति को बताया-सर, वो एक भिखारी है. उसे ठंड से बचने के लिए एक अदद कंबल की जरूरत है.

राष्ट्रपति ने कहा-ठीक है, उसे कंबल दे दो. अगली सुबह राष्ट्रपति ने खिड़की से पर्दा हटाया. उन्हें घोर हैरानी हुई. वो भिखारी अभी भी वहां जमा है. उसके पास ओढ़ने का कंबल अभी तक नहीं है. राष्ट्रपति गुस्सा हुए और पीए से पूछा-यह क्या है? उस भिखारी को अभी तक कंबल क्यों नहीं दिया गया?

पीए ने कहा-मैंने आपका आदेश सेक्रेटरी होम को बढ़ा दिया था. मैं अभी देखता हूं कि आदेश का पालन क्यों नहीं हुआ.

थोड़ी देर बाद सेक्रेटरी होम राष्ट्रपति के सामने पेश हुए और सफाई देते हुए बोले-सर, हमारे शहर में हज़ारों भिखारी है! अगर एक भिखारी को कंबल दिया तो शहर के बाकी भिखारियों को भी देना पड़ेगा और शायद पूरे मुल्क में भी. अगर न दिया तो आम आदमी और मीडिया हम पर भेदभाव का इल्ज़ाम लगायेगा.

राष्ट्रपति को गुस्सा आया-तो फिर ऐसा क्या होना चाहिए कि उस ज़रूरतमंद भिखारी को कंबल मिल जाए.

सेक्रेटरी होम ने सुझाव दिया, सर, ज़रूरतमंद तो हर भिखारी है. आपके नाम से एक 'कंबल ओढ़ाओ, भिखारी बचाओ' योजना शुरू की जाये. उसके अंतर्गत मुल्क के सारे भिखारियों को कंबल बांट दिया जाए.

राष्ट्रपति खुश हुए. अगली सुबह राष्ट्रपति ने खिड़की से परदा हटाया तो देखा कि वो भिखारी अभी तक बेंच पर बैठा है. राष्ट्रपति आग बबूला हुए. सेक्रेटरी होम तलब हुए. उन्होंने स्पष्टीकरण दिया-सर, भिखारियों की गिनती की जा रही है ताकि उतने ही कंबल की खरीद हो सके. राष्ट्रपति दांत पीस कर रह गए. अगली सुबह राष्ट्रपति को फिर वही भिखारी दिखा वहां. खून का घूंट पीकर रह गये वो. सेक्रेटरी होम की फ़ौरन पेशी हुई. सेक्रेटरी ने विनम्रता से बताया-सर, ऑडिट ऑब्जेक्शन से बचने के लिए कंबल खरीद का शार्ट-टर्म कोटेशन डाला गया है. आज शाम तक कंबल खरीद हो जायेगी और रात में बांट भी दिए जाएंगे.

राष्ट्रपति ने कहा-यह आखिरी चेतावनी है. अगली सुबह राष्ट्रपति ने खिड़की पर से परदा हटाया तो देखा बेंच के इर्द-गिर्द भीड़ जमा है. राष्ट्रपति ने पीए को भेज कर पता लगाया. पीए ने लौट कर बताया-कंबल नहीं होने के कारण उस भिखारी की ठंड से मौत हो गयी है.

गुस्से से लाल-पीले राष्ट्रपति ने फौरन सेक्रेटरी होम के तलब किया. सेक्रेटरी होम ने बड़े अदब से सफाई दी-सर, खरीद की कार्यवाही पूरी हो गई थी. आनन-फानन में हमने सारे कंबल बांट भी दिए. मगर अफ़सोस कंबल कम पड़ गये.

राष्ट्रपति ने पैर पटके-आखिर क्यों? मुझे अभी जवाब चाहिये.

सेक्रेटरी होम ने नज़रे झुकाकर बोले-श्रीमान पहले हमने कम्बल अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों को दिया, फिर अल्पसंख्यक, फिर ओ.बी.सीकृकृकृआखिर में जब उस भिखारी का नंबर आया तो कंबल खत्म हो गए.

राष्ट्रपति चिघाड़े-आखिर में क्यों?

सेक्रेटरी होम ने भोलेपन से कहा-सर, इसलिये कि उस भिखारी की जाति ऊँची थी और वह आरक्षण की श्रेणी में नहीं आता था और जब उसका नम्बर आया तो कम्बल खत्म हो गये.

वह बड़ा मुल्क भारत है. जहां की तमाम सरकारी, जनोपयोगी, कल्याणकारी योजनाएं ऐसी ही चलती है. एक तो इनका क्रियान्वयन इतना देर से चालू होता है, उसके बाद बंदरबाट, वास्तविक जरूरतमंद लोगों तक तो लाभ पहुंचते पहुंचते सब कुछ समाप्त हो चुका होता है. किसानों को सूखा पड़ने, बाढ़ आने पर राहत राशि दी जाती है लेकिन उन पहुंचते पहुंचते वह या तो आत्महत्या कर चुका होता है या उसकी कगार पर खड़ा होता है, सैनिकों की विधवाओं को राहत मिलते-मिलते वे लोगों के घरों में बर्तन मांजते-मांजते अपना जीवन गुजार चुके होती है. ठंढी का कंबल गर्मी में ....
.ये है हमारा प्यारा, महान, देश व उसकी कार्यप्रणाली.

इसमें दिए गये विचारों आंकड़ों की सत्यता को प्रमाणित नहीं करते है, लेकिन इन तथ्यों के माध्यम से उठाये गये मुद्दे विचारणीय है. इसका स्तम्भ का मकसद केवल आम आदमी के विचारों को पाठकों/सरकार तक पहुंचाना. हमारा किसी पार्टी/व्यक्ति/धर्म से कोई विरोध नहीं है. सभी के लिए समान रुप से खुला है यह स्तम्भ. बस इस बात का विशेष ध्यान रखें कि किसी भी विचार से किसी धर्म/व्यक्ति पर सीधे आक्षेप ना हो.

इस्तीफा किसे देना चाहिए

1-वो व्यक्ति जिसपे धारा 120बी और धारा 420 के तहत मुकदमा दर्ज हो, तथाकथित अपराध के समय जिसकी उम्र 13 या 14 साल हो?

(अभियुक्त तेजस्वी यादव, उपमुख्यमंत्री, बिहार)

२-या वो व्यक्ति जिस पर धारा 506, 307, 147, 148, 297, 336, 504, 295, 153ए, और 435 के तहत मुकदमा दर्ज हो?

(अभियुक्त अजय सिंह बिष्ट उर्फ आदित्य नाथ योगी, मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश)

3-या फिर वो जिसके ऊपर 302/120बी/153ए/188/47/148/153/153ए/352/188/323/504/506/147/295ए/153/420/467/465/171/188/147/353/186/504/147/332/504/332/353/506/380/147/148/332/336/186/427/143/353/341 इन धाराओ के तह मुकदमा दर्ज हो?

(अभियुक्त केशव प्रसाद मौर्य, उपमुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश)

अमृतांशु तिवारी, 8002368662

आस्था का प्रश्न

☞ बात आस्था की हो तो चूहे मारने वाली दवा पर रोक होनी चाहिए आखिर गणेश जी का वाहन जो है!

☞ बात आस्था की हो तो सांप मारने वालों को जेल में होना चाहिए आखिर भोलेनाथ का कंठहार जो है.

☞ बात आस्था की हो तो सूअर की भी पूजा होनी चाहिए क्योंकि विष्णु का अवतार जो है.

☞ बात आस्था की हो तो बन्दरों को प्रयोगशालाओं में नहीं मरना चाहिए, हनुमानजी के अवतार जो है!

☞ बात सिर्फ देश में अशांति और आपसी नफरत फैलाकर राजनीति करनी हो, मंहगाई बढ़ाते रहना हो, टैक्स बढ़ाते रहना हो, धन-पशुओ की जेबें भरी जाती रहें ताकि चुनाव में हजारों/लाखों करोड़ काला धन खर्च किया जा सके तो यकीन मानिए.....

देश विकास के पथ पर दौड़ रहा है.

रमन कुमार, 9324618055

सत्ता का लुत्फ उठा रहे है

☞ जब इतिहास लिखा जाएगा तो ये भी लिखना होगा कि 21वीं सदी में जब...कोरिया, अमेरिका जैसे मुल्क हाईड्रोजन बमों का परीक्षण कर रहे थे....

☞ जापान, फ्रांस, आस्ट्रेलिया जैसे देश तकनीक की दुनिया में सुपर पावर बन रहे थे.....

☞ चीन हर साल अपने नागरिकों को 1.25 करोड़ नौकरियां दे रहा था...

☞ तब भारत की सरकार, गुलाम मीडिया, और कुछ फ़र्जी संगठन भारतीय नागरिको को, गाय, गोबर, गोमुत्र, मंदिर, मस्जिद, तलाक, लव जिहाद, गो हत्या, योगा आदि में उलझाकर सत्ता का लुत्फ उठा रहे थे.

-अमृतांशु तिवारी, 8002368662

उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों के जिलाधिकारियों के ह्वाटसऐप नंबर जिन पर अपने जिले से सम्बंधित शिकायते भेज सकते है।

माननीय मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार योगी आदित्यनाथ से सम्पर्क नंबर
मुख्यमंत्री आवासः 0522–2236838, 2235599, 2236985
फैक्सः 2239573,
ईमेलः cmup@nic.in

आगरा	9454417509
अलीगढ़	9454415313
इलाहाबाद	9454417517
अम्बेडकर नगर	9454417539
अमरोहा	9454417571
ओरैया	9454417550
आजमगढ़	9454417521
बदाऊं	9415908422
बागपत	9454417562
बहराइच	9454417535
बलिया	9454417522
बलरामपुर	9454417536
बांदा	9454417531
बाराबंकी	9454417540
बरेली	9454417524
बस्ती	9454417528
बिजनौर	9454417570
बदायूं	9454417525
बुलंदशहर	9454417576
चंदौली	9454417576
चित्रकूट	9454417532
छत्रपति साहू जी महाराज नगर	9454418891
देवरिया	9454417543
एटा	9454417514
ईटावा	9454417551
फैजाबाद	9454417541
फरुखाबाद	9454417552
फतेहपुर	9454417518
फिरोजाबाद	9454417510
गाजियाबाद	9454417565
गाजीपुर	9454417577
गोंडा	9454417537
गोरखपुर	9454417544
हमीरपुर	9454417533
हापुर	8449053158
हरदोई	9454417556
हाथरस	9454417515
जालौन	9454417548
जौनपुर	9454417578
झांसी	9454417547
कन्नौज	9454417555
कानपुर नगर	9454417554
काशीराम नगर	9454417516
कौशाम्बी	9454417519
खीरी	9454417558
कुशीनगर	9454417549
ललितपुर	9454417549
लखनऊ	9454417557
महराजगंज	9454417546
महोबा	9454417534
मैनपुरी	9454417511
मथुरा	9454417512
मऊ	9454417523
मेरठ	9454417566
मिर्जापुर	9454417567
मुरादाबाद	9897897040
मुजफ्फरनगर	9454417574
पीलीभीत	9454417526
प्रतापगढ़	9454417520
रायबरेली	9454417559
रमाबाई नगर	9454417559
रामपुर	9454417553
सहारनपुर	9454417575
सम्भल	9454416890
संत कबीर नगर	9454417529
संत रबिदास नगर	9454417568
शाहजहांपुर	9454417527
शामली	9454416996
श्रावस्ती	9454417538
सिद्धार्थनगर	9454417530
सीतापुर	9454417560
सोनभद्र	9454417560
सुल्तानपुर	9454417542
उन्नाव	9454417561
वाराणसी	9454417579

ये आग कब बुझेगी यह एक नया स्तम्भ चालू किया गया है. इस स्तम्भ में आप किसी अधिकारी, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, मंत्री तक कोई भी बात/शिकायत पहुंचाना चाहते हैं तो हम इसे पत्रिका के माध्यम से पहुंचायेगें. इसमें आप अपनी भड़ास भी निकाल सकते है किसी व्यक्ति, नेता या अधिकारी के खिलाफ. बस आपकी भाषा शिष्टाचार की सीमा में बंधी होनी चाहिए. **संपादक**

हिटलर जैसा लोकप्रिय जर्मनी में कोई नहीं हुआ. हिटलर जैसा जर्मनी को किसी ने बर्बाद भी नहीं किया.

प्रभु की प्राप्ति किसे होती है

एक राजा था. वह बहुत न्याय प्रिय, प्रजा वत्सल एवं धार्मिक स्वभाव का था. वह नित्य अपने इष्ट देव की बड़ी श्रद्धा से पूजा-पाठ और याद करता था. एक बार भगवान प्रसन्न होकर उसे दर्शन दिये तथा कहा-'राजन! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूं. बोलो तुम्हारी काई इच्छा है?' प्रजा को चाहने वाला राजा बोला-'भगवन् मेरे पास आपका दिया सब कुछ है. आपकी कृपा से राज्य में सब प्रकार सुख-शान्ति है. फिर भी मेरी एक ही ईच्छा है कि जैसे आपने मुझे दर्शन देकर धन्य किया, वैसे ही मेरी सारी प्रजा को भी कृपा कर दर्शन दीजिये.'

'यह तो सम्भव नहीं है.' ऐसा कहते हुए भगवान ने राजा को समझाया. परन्तु प्रजा को चाहने वाला राजा भगवान से जिदद करने लगा. आखिर भगवान को अपने भक्त के सामने झुकना पड़ा और वे बोले-'ठीक है, कल अपनी सारी प्रजा को उस पहाड़ी के पास ले आना और मैं पहाड़ी के ऊपर से सभी को दर्शन दूंगा.'

ये सुन कर राजा अत्यन्त प्रसन्न हुआ और भगवान को धन्यवाद दिया. अगले दिन सारे नगर में ढ़िंढोरा पिटवा दिया कि कल सभी पहाड़ के नीचे मेरे साथ पहुंचे, वहां भगवान आप सबको दर्शन देगें. दूसरे दिन राजा अपने समस्त प्रजा और स्वजनों को साथ लेकर पहाड़ी की ओर चलने लगा. चलते-चलते रास्तें में एक स्थान पर तांबे के सिक्कों का पहाड़ देखा. प्रजा में से कुछ एक लोग उस ओर भागने लगे. तभी ज्ञानी राजा ने सबको सर्तक किया कि कोई उस ओर ध्यान न दें, क्योंकि तुम सब भगवान से मिलने जा रहे हो, इन तांबे के सिक्कों के पीछे अपने भाग्य को लात मत मारो.

परन्तु लोभ-लालच में वशीभूत प्रजा के कुछ एक लोग तो तांबे के सिक्कों वाली पहाड़ी की ओर भाग ही गये और सिक्कों की गठरीं बनाकर अपने घर कि ओर चलने लगे. वे मन ही मन सोच रहे थे, पहले इन सिक्कों को समेट लें, भगवान से तो फिर कभी मिल ही लेगें.

राजा खिन्न मन से आगे बढ़े. कुछ दूर चलने पर चांदी के सिक्कों का चमचमाता पहाड़ दिखाई दिया. इस बार भी बचे हुए प्रजा में से कुछ लोग,

उस ओर भागने लगे और चांदी के सिक्कों की गठरी बनाकर अपने घर की ओर चलने लगे. उनके मन में विचार चल रहा था कि ऐसा मौका बार-बार नहीं मिलता है. चांदी के इतने सारे सिक्के फिर मिले न मिले, भगवान तो फिर कभी मिल ही जायेंगे. इसी प्रकार कुछ दूर और चलने पर सोने के सिक्कों का पहाड़ नजर आया. अब तो प्रजा जनों में बचे हुये सारे लोग तथा राजा के स्वजन भी उस ओर भागने लगे. वे भी दूसरों की तरह सिक्कों कि गठरींया लाद-लाद कर अपने-अपने घरों की ओर चल दिये. अब केवल राजा और रानी ही शेष रह गये थे. राजा रानी से कहने लगे-'देखो कितने लोभी ये लोग है. भगवान से मिलने का महत्व ही नही जानते है. भगवान के सामने सारी दुनियां की दौलत क्या चीज है? सही बात है-रानी ने राजा कि इस बात का समर्थन किया और वह आगे बढ़ने लगे. कुछ दूर चलने पर राजा और रानी ने देखा कि सप्तरंगि आभा बिखरता हीरों का पहाड़ है. अब तो रानी से भी रहा नहीं गया, हीरों के आर्कषण से वह भी दौड़ पड़ी और हीरों कि गठरी बनाने लगी. फिर भी उसका मन नहीं भरा तो साड़ी के पल्लू में भी बांधने लगी. वनज के कारण रानी के वस्त्र देह से अलग हो गये, परंतु हीरों की तृष्णा अभी भी नहीं मिटी. यह देख राजा को अत्यन्त ही ग्लानि और विरक्ति हुई. बड़े दुःखद मन से राजा अकेले ही आगे बढ़ते गये. वहां सचमुच भगवान खड़े उसका इन्तजार कर रहे थे. राजा को देखते ही भगवान मुस्कुराये और पूछा-''कहां है तुम्हारी प्रजा और तुम्हारे प्रियजन. मैं तो कब से उनसे मिलने के लिए बेकरारी से उनका इन्तजार कर रहा हूं.' राजा ने शर्म और आत्म-ग्लानि से अपना सर झुका दिया. तब भगवान ने राजा को समझाया-'राजन, जो लोग अपने जीवन में भौतिक सांसारिक प्राप्ति को मुझसे अधिक मानते हैं, उन्हें कदाचित मेरी प्राप्ति नहीं होती और वह मेरे स्नेह तथा कृपा से भी वंचित रह जाते है!

सार...जो जीव अपनी मन, बुद्धि और आत्मा से भगवान की शरण में जाते है, और सर्व लौकिक सम्बधों को छोड़ के प्रभु को ही अपना मानते है वो ही भगवान के प्रिय बनते हैं.

मानव का आततायीपन

ओ मानव देख।
अपने आततायीपन से
तूने
क्या-क्या खो दिया।
अमृत सी धरती में
विष-बीज बो दिया।
धरती को कोड़ा
पहाड़ो को झकझोरा-
न भरा, मन तो
गगन भी टटोला
चाँद, मंगल पर
धावा बोला....!
जंगलो को काटा;
नदियों, कुंओं तालाबो को
पाटा।
पर हा...बेवकूफ,
लगा लिया खुद
अपने ही मुंह पर चांटा...
विज्ञान और प्रगति के नाम पर
कितने खेल खेले
सुख-सुविधाओं और
खुशियों के लिए
कितने पापड़ बेले।
पर तू रह गया आज
बिल्कुल अकेले।
अणु-परमाणु प्रक्षेपणास्त्र
बनाएं।
जल-वायु भूमि पर
अनेक कहर ढाए
पर क्या पाए...?
साँस लेने को न
शुद्ध हवाएँ रहीं!
वैरन सी हो गई
दसो दिशाएं रहीं।
न दिव्य औषधीय
फल रहे
न पीने को पर्याप्त
जल रहे...!
धरती की कोख
हो रही खाली..
ये सारी विपदाएँ तूने
स्वयं ही पा ली।।
संभल
अब तो संभल!
कर संचय जल!
संरक्षण कर
गिरि, वन धरती
भू अंतस्थल!
नही ंतो.
कीड़े-मकोड़े की तरह
मरेगा-बिलबिलाकर!
हँसेगी प्रकृति, तब
खिलखिलाकर।
धरती डोलेगी
आकाश जलेगा
भू-गर्भ और पर्वतों में
ज्वालामुखी फटेगा!
रूक जा-रूक जा
मत कर-अब विकास
नहीं तो अब होगा
सर्वनाश।

-डॉ० अन्नपूर्णा श्रीवास्तव,
बेतिया, पं० चम्पारण, बिहार

जमकर बरसों बदरवा

चेत भाई चेत
सूखे पड़े खेत।
अब तो बरस जा
मत कर तू खेंच।।
फसल मुरझाई
की बाग रसोई।
किया टोटका
फिर भी वर्षा न आई।।
आषाढ़ गया खाली
सावन की देख लाली।
मना रहे इंद्र राजा को
हम बजाकर ढ़ोल-थाली।।
काट सारे पेड़ सांझ-सवेर
फिर कैसे हो हमारी खैर।
पेड़ ही लाते थे वर्षा को
पेड़ो की कमी से हो रही देर।।
आओं लगाये हमारे खेत
घर-आंगन में पेड़ ही पेड़।
हरित धरा खुशहाली लाएं
जल, फसल, सुफल समेत।।

-गोपाल कौशल, धार, म.प्र.

कर्ज़ माफी का मर्ज़

बड़े धड़ल्ले देश में, फैल रहा ये मर्ज।
हर कोई अब चाहता, माफ होय सब कर्जा।
माफ होय सब कर्ज, सभी लड़ रहे लड़ाई।
सरकारों ने स्वयं, माफ की आग लगाई।।
किये वायदे खूब, वोट आ जायें पल्ले।
आन्दोलन "राजगुरु", हो रहे बड़े धड़ल्ले।।

कर्ज माफ की होड़

कई तरह के टेक्स ले, रहे कमर ये तोड़।
सभी दलों में लगी है, कर्ज माफ की होड़।।
कर्ज माफ की होड़, जेब से भरिये भाई।
बहा रहे क्यों मुफ्त, जनों की कठिन कमाई।
उबल रहा आक्राश, "राजगुरु" हद्द हो गई।
माफ, नई स्कीम, निकालते हो तुम कई।।।

-आचार्य शिवप्रसादसिंह राजभर
"राजगुरु", जबलपुर, म.प्र.

बहुत कुछ बाकी है

✍ डॉ० आशा रानी,
जबलपुर, म०प्र०

रा
राह दिखाना मजबूरी है,
ईमान हमारा बाकी है।
दुश्मन भोंके पीठ में खंजर
सबक सिखाना बाकी है।1
विस्फोटों से ध्वस्त नगर का,
'आज' बनाना ही दुस्कर है,
संघर्षों में हम जो गँवाए,
उस सम्मान को पाना बाकी है। 2
जंजीर गुलामी टूट चुकी पर
भारत के हर खंड में देखो
उथल-पुथल औ आग लगी
पता नहीं क्यूँ अवाम में जाले अब भी बाकी हैं।3
हर चौराहे सड़क पर मचा तूफान है,
मरने वालों से है लाल धरा,
सुकमा की वो बर्बरता
घर के दुश्मनों में अभी भी जान बाकी है।4
पीछे ढकेलते चलो तुम सीमा से,
कितना भी पाकिस्तान बढ़े
जख्मों से सीने भरे हुए हैं
शहीदों की अभी जीत बाकी हैं।5

ज
जग उठा है बच्चा-बच्चा,
बल तन में पौरुष उर में
नव प्रभात की लहर चली है
करुणा औ प्रेम की गंगा बहनी बांकी है।6
तंग हुआ अब देश ये प्यारा,
उठो साथियों कर्तव्य हमारा
अमर बनाओ आजादी को
धमनियों में जब तक रक्त बाकी है।7
बदल रही है तस्वीर देश की
वसुंधरा है पुलकित होती
दुनिया में परचम लहराए
वाड्.मय में अभी ज्ञान बाकी है।8
चीन अमरीका समझ गए अब
भारत में कितना दम-खम
रूस जापान सब सजदा करें,
संयुक्त राष्ट्रसंघ को समझाना बाकी है।9
बहुत हो चुका रोना-धोना
बहुत हुआ अब समझौता
दुर्गा भी हम उग्रा भी हम
भारत की इस भूमि में भारती अभी बाकी है।10

नी
नीड़ का निर्माण होगा,
स्वप्न अब साकार होगा,
अब नहीं शंका हृदय में
जीने की आशा बाकी है।11
देखते हो क्या नहीं तुम!
छंट रही बदली गगन की
आँकते हो क्या नहीं तुम
बस चाँद पर पहुँचना बाकी है।12
खुशी के इन मृदु क्षणों में
क्यों न गा लूँ गीत नश्वर,
जग कंपित हो उठेगा,
हिंद का विश्व गुरु होना बाकी है।13
मुस्कानों में, रोदन में,
सजग मन के स्पंदन में
करुणा बनकर सब मिला करें
राग-द्वेष के चौराहे पर दिल मिलाना बाकी है।14
समझों तुम खून बहाने वालों
दिखता है जो, भरम है आँखों का
जगत् एक छलावा जानो
सुख-दुख क्रम है एक शून्यता अभी बाकी है।15

ति
तिनका-तिनका जुड़ जाएगा,
थल में कण में, धारा में,
इस प्रेम सिन्धु के तल में,
नेह के मोती बाकी हैं। 16
चाहे कितने दूर रहो पर,
प्यार कभी तुम कम न करना
पाथेय लेकर बढ़ते जाओ लक्ष्य पर
आने वाला सुनहरा कल अभी बाकी है।१७
धोखे का अवसान हो रहा,
डूबता है सान्ध्य तारा
नाच उठा है मन-मयूर
विहग कलरव बाकी है।१८
वाद, वाद के नारों में
मानव, छल कभी समझ न पाया
कुछ अपना और कुछ उनका भी
हिस्सा ये समझना बाकी है।१९
दमन करें मिल शैतानों का
कायरता जो ओढ़े हैं
शिव की नगरी स्वर्ग हमारा
केसर की बगिया बाकी है।20
नत-मस्तक वे हो जाएं
विश्व सुनहरा बच जाएगा
हृदय की पुकार सुनो
विश्व बंधुत्व अभी बाकी है।21

तेवरी

मीठे सोच हमारे, स्वारथवश कड़वाहट धारे।
भइया का दुश्मन अब भइया घर के भीतर है।
इक कमरे में मातम, भूख गरीबी अश्रुपात गम
दूजे कमरे ताता-थइया घर के भीतर है।
निज दहेज के ताने, सास-ननद के राग पुराने
नयी ब्याहता जैसे गइया घर के भीतर है।
नम्र विचार न भाये, सब में अहंकार गुर्राये।
हर कोई बन गया ततइया घर के भीतर है।
नये दौर के बच्चे, तुनक मिजाजी-अति नकनच्चे
छटंकी भी अब जैसे ढइया घर के भीतर है।

-रमेश राज, अलीगढ़, उ०प्र०

मध्य प्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी द्वारा कार्यक्रम आयोजित

मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी द्वारा आरम्भ की गई एकल रचना पाठ की श्रृंखला सृजन-2 के अन्तर्गत 22 जून 2017 गुरुवार को स्वराज भवन भोपाल के सभागार में सुप्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ.देवेन्द्र दीपक, निदेशक निराला सृजन पीठ की अध्यक्षता एवं श्री युगेश शर्मा के मुख्य अतिथि में डॉ.विमल कुमार शर्मा, श्री हरिवल्लभ शर्मा, श्री विश्वनाथ शर्मा 'विमल' एवं श्री अशोक कुमार तिवारी का रचना पाठ आयोजित हुआ. सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तदुपरान्त कार्यक्रम के अध्यक्ष, मुख्य अतिथि तथा रचनापाठ करने वाले रचनाकारों का पुष्पाहार पहनाकर स्वागत किया गया.

मध्यप्रदेश तुलसी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष, डॉ.मोहन तिवारी 'आनंद' ने कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला. कार्यक्रम के प्रथम सत्र में नई कविता के उद्‌भव एवं विकास पर चर्चा की गई. डॉ.देवेन्द्र दीपक, श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत' सक्सेना, श्री यतीन्द्रनाथ राही, श्री श्याम बिहारी सक्सेना, डॉ. राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर' श्री गोकुल सोनी आदि ने अपने वक्तव्य दिये.

द्वितीय सत्र में रचनाकारों द्वारा रचना पाठ प्रारम्भ हुआ सर्वप्रथम श्री अशोक कुमार तिवारी ने 4 अपनी रचनाओं का पाठ किया. द्वितीय क्रम पर श्री विश्वनाथ शर्मा 'विमल' ने अपनी 5 रचनाओं का पाठ किया. तीसरे क्रम में श्री हरिवल्लभ शर्मा ने 4 रचनाओं का पाठ किया। अन्त में डॉ. विमल कुमार शर्मा ने 5 रचनाओं पाठ किया.

रचनापाठ के बाद रचनाकारों की रचनाओं पर समीक्षात्मक टिप्पणियों का दौर चला. सर्वप्रथम डॉ.सुशील गुरु ने रचनाओं एवं प्रस्तुतिकरण पर अपने विचार रखे, श्री गोकुले सोनी, श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत' डॉ.अनीता चौहान, डॉ.निहारिका रश्मी, डॉ.सुलभा माकोड़े, आशा श्रीवास्तव, ममता श्रीवास्तव, ममता बाजपेई, श्री यतीन्द्रनाथ राही, श्री श्याम बिहारी सक्सेना, डॉ. राजेन्द्र शर्मा 'अक्षर' आदि ने समीक्षात्मक विचार प्रस्तुत किये.

मुख्यअतिथि श्री युगेश शर्मा ने कार्यक्रम पर समीक्षात्मक टिप्पणी की एवं डॉ. देवेन्द्र दीपक जी ने अध्यक्षीय उद्‌बोधन दिया। डा.देवेन्द्र दीपक ने कार्यक्रम के आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि म.प्र.तुलसी साहित्य अकादमी के सभी कार्यक्रम उत्कृष्ट रहते हैं मैं आयोजको को हार्दिक बधाई देता हूँ.

कार्यक्रम का संचालन चन्द्रभान राही ने किया और डॉ.मोहन तिवारी आनंद ने आगंतुको आभार व्यक्त किया।

बीसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारो हेतु पुस्तकें आमंत्रित है

साहित्य सदन, भोपाल द्वारा बीसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारो हेतु साहित्य की अनेक विधाओ में पुस्तकें आमंत्रित की गई है. उपन्यास, कहानी, कविता, व्यंग्य, निबंध एवं बाल साहित्य विधाओं पर प्रत्येक के लिए इक्कीस सौ रुपये राशि के पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे. पुरस्कारों हेतु पुस्तकों की दो प्रतियां, लेखक के दो चित्र एवं प्रत्येक विधा की प्रवृष्टि के साथ 200/रुपये प्रवेश शुल्क भेजना होगा। हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों की मुद्रण अवधि 1 जनवरी 2015 से 31 दिसम्बर 2017 के मध्य होना चाहिये. अन्य जानकारी हेतु मोबाइल नंबर 09977782777 और दूरभाषः 0755—2494777 या ईमेलः jagdishkinjalk@gmail.com

पुस्तक भेजने का पताः
श्रीमती राजो किजंल्क,
साहित्य सदन, 145—ए, सांईनाथ नगर, सी सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-462042
पर 30 दिसम्बर 2017 के पूर्व प्राप्त की जाएगी।

धारावाहिक लघु उपन्यास

भाग-25

निर्भया

✍**अंकिता साहू,** इलाहाबाद, उ.प्र.

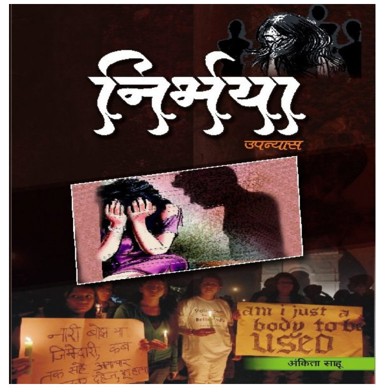

उसने अपर्णा से कहा कि, ''दीदी हम लोगों को सबसे पहले ये सोचना चाहिए कि निर्भया दीदी को इंसाफ कैसे मिलेगा आई मीन उनका केस कौन हैडंल करेगा, उसके बाद कुछ सुबूत भी चाहिए, जो निर्भया दीदी को सही साबित कर सके.......आपने कुछ तो सोचा होगा ना. हाँ प्रगति सोचा है और तुम्हें ये जानकर हैरत और खुशी भी होगी कि केस खुद निर्भया ही लड़ेगी और ये उसका ही फैसला है.

क्या? (बिल्कुल अचम्भित हो जाती है प्रगति और उसकी सारी सहेलियाँ) दीदी खुद अपना केस लड़ेगी? पागल हो गयी है क्या आप लोग? हालत तो देखी है ना उनकी, उनका कोई ऐसा एक अंग दिखा दो मुझे जो जख्मी ना हो, केस लड़ना तो दूर अगले 10–15 दिनों तक खड़ी भी हो जाएँ तो बहुत आश्चर्य होगा, हमें. आण्टी आप ही बताओ ना कि क्या आप सही में चाहती है कि इस स्थिति में भी आपकी बेटी लड़ें. बोलिए ना आण्टी प्लीज.

हाँ, मै चाहती हूँ कि इस स्थिति में ही मेरी बेटी लड़े भी और जीते भी, नही तो फिर वो मर भी जाएँ तो ही अच्छा है. उसका शरीर बार-बार टूट रहा है, वो एक पाँव पर खड़ी होना शुरू करती है तो फिर उसके दूसरे पाँव तोड़ दिये जाते है, जब वो कुछ सोचना शुरू करती है तो उसका सिर फोड़ दिया जाता है, जब हँसना शुरू करती है तो उसी पर उसके जिस्म के सौदे का आरोप लग जाता है. प्रगति अब उसकी हालत नहीं देखी जाती. राघव ने तबाह कर दिया मेरी बच्ची को, अब अगर वो तबाह नही हुआ वो भी मेरी बेटी के हाथों तो मै उस कमीने का गला घोंट दूँगी. निर्भया के माँ की बातें सुनकर कमरे में मौजूद सभी भावनात्मक रूप से एक संवेदना की डोरी में बँध गये. प्रगति ने माँ का हाथ पकड़ा और बोली आण्टी डवन्ट वरी आपकी बेटी जरूर जीतेगी. अच्छा हम चलते है. फिर आयेंगे और अपर्णा दीदी मेरा एक फ्रेन्ड है संकल्प वो भी बहुत इनसिएटिव है वोमेन्स संस्था के प्रति, उसको अपने साथ जोड़कर हम अच्छी तादाद में यूथ को इकट्ठा कर सकते है. और तब तक आप कुछ और साक्ष्य इकट्ठा करना, प्लीज.

ओके प्रगति एन्ड थैक्स, हमें उत्साहित करने के लिए. जब निर्भया होश में आयेगी तो बहुत खुश होगी. जैसे ही प्रगति जाने को होती है वैसे ही अतुल कमरे में प्रवेश करता है. अपर्णा-परिचय कराते हुए कहती है कि ये अतुल है, निर्भया का भाई.

प्रगति- हाय, अतुल

अतुल-हॉय

प्रगति-अच्छा ये बता, तु सोशल नेटवर्क पर सर्फिंग तो करता होगा ना. आज तू फेसबुक के जरिये सबको निर्भया दीदी के फेवर में होने का मैसेज कर- ओके?

अतुल- ठीक है।

(प्रगति अपने दोस्तों के साथ चली जाती है अगले दिन निर्भया को होश आता है. वो अपने सामने अपर्णा, माँ और अतुल को पाती है. उसने अपर्णा से कहा तू पागल हो गयी है क्या? मेरी वजह से तू अपनी जिन्दगी क्यूँ अँधेरों मे ले जा रही है मैने तुझको क्या केवल गम देने के लिए दोस्ती की है? अपर्णा, बात बदलते हुए कहती है कि अच्छा तू ये सब छोड़, तुझे पता है कल तकरीबन 10–15 लड़कियाँ हमारा साथ देने घर आयी थी. वो सब तुझसे बहुत प्यार करती है तेरे साथ है और चाहती है कि तुझे इंसाफ मिले. निर्भया खुशी से एकदम भावात्मक हो जाती है. निर्भया कहती है कि सच-अपर्णा तू सही कह रही है? बहुत दिनों बाद मुझे कोई खुशी मिली है. मै बहुत खुश हूँ. मुझे उनसे मिलना है. ठीक है बाबा! मिल लेना पर पहले मुझे ये बता कि तुझे कुछ ऐसी बातें या ऐसा सबूत याद है जिससे कि तू राघव को गलत साबित कर सकें. सोच, निर्भया प्लीज. अपर्णा मुझे कुछ भी नहीं याद है और मुझे लगता है कि ऐसा कुछ मिलेगा भी नहीं. मिलेगा निर्भया याद कर कोई जगह, कोई चीज, मोबाईल, बातें कुछ भी.

एक मिनट-शायद कुछ है, पर पक्का नहीं. बता निर्भया बता, कुछ भी हो तो बता.

जब राघव मुझसे मिलने आया था, आई मीन मेरे बच्चे को मारने से पहले, तब उसने मुझे कॉल किया था. उसके बाद मै अपने एक केस के लिए प्रैक्टिस कर रही थी. मेरी आदत है कि मै प्रैक्टिस करते वक्त उसी अंदाज में, जैसे वकील बोलते है बोलती हूं

ताकि सुन सकूँ कि कहाँ गलती होती है, मुझसे उसके बाद मैने रिकार्डिंग ऑन ही थी जब राघव आया. उसके बाद नहीं पता मुझे...

अपर्णा खुशी से उछल पड़ती है और खुशी के मारे निर्भया के गालों को चूम लेती है और कहती है-यस-यस हमें प्रूफ मिल गया, अगर रिकार्डिंग एप्लीकेशन ऑन ही होगा तो राघव की सारी बातें रिकार्ड हो गयी होगी. मगर कैसे पता चलेगा, रूक मैं प्रगति को कॉल करती हूँ शायद वो हमारी मदद कर सके.

हैलो प्रगति! यार, आई नीड योर हेल्प!

हाँ दीदी बोलिए.

तू मोबाईल के रिकार्ड्स को चेक करवा सकती है.

दीदी मैं तो नही, हाँ, शायद संकल्प करवा ले. आप मोबाईल नंबर बता दो.

ठीक है तू आ जा, इसी बहाने निर्भया से मिल लेना।.

ओ.के दीदी! बॉय!

निर्भया ये बता कि डेट्स कैसे क्लीयर होंगी, राघव के चमचों के वजह से बहुत मुश्किल आ रही है.

हाँ, मुझे पता है अपर्णा. साले वकील होकर भी देश में सच्चाई को दबाने की कोशिश करते है. अगर राघव से भी ज्यादा पावरफुल इंसान आ जाए, तो ही बात बन सकती है.

अच्छा निर्भया तू अब आराम कर. आण्टी ख्याल रखिये इसको, दवॉईयाँ देती रहियेगा. मैं चलती हूँ.

माँ-ठीक है बेटी, तू भी अपना ख्याल रख.

अपर्णा- ओ.के. बॉय, बाय निर्भया

माँ- निर्भया तू कैसे केस लड़ेगी, इस हालत में बेटी?

निर्भया- माँ, इच्छा शक्ति से. जब तक ये मेरे पास है मै ना थक सकती हूँ, ना हार सकती हूँ और ना ही निराश हो सकती हूँ.

माँ-गर्व है मुझे तुझ पर, अब आराम कर. अगले दिन प्रगति, संकल्प को लेकर निर्भया के घर पहुँच जाती है. अपर्णा वहाँ पहले से मौजूद रहती है. अपर्णा, प्रगति को निर्भया की तरफ इशारा करके, उससे बोलने-चालने को कहती है. निर्भया प्रगति की तरफ बढ़ती है और उसे गले से लगाकर कहती है कि थैंक्स डियर. तुम मेरा साथ देकर ना केवल हौंसला बढ़ा रही हो बल्कि मुझमें एक ताकत भी भर रही हो. तुम्हारा साथ मुझे ये एहसास दिला रहा है कि मेरे इस संघर्ष में तुम सब मेरे साथ हो, मैं बिल्कुल अकेली नही हूँ.''

प्रगति- दीदी, बस.... अब सोचने की नही जीतने की बारी है. आपके जिस्म के एक-एक घाव को छूकर मैंने उसकी चुभन को महसूस करने की अधूरी कोशिश की थी, यकीन मानिये उस अधूरेपन ने मुझे इतना दर्द दे दिया कि शायद उसमें पूरी जिन्दगी भी उस पर मरहम लगा दो तो ना भरे. दीदी आप कैसे इन सब के साथ....

निर्भया-प्रगति जिसको भी लाइफ में इतनी सारी तकलीफें हो (निर्भया बोलती ही रहती है कि बीच मे अतुल आकर प्रगति को आवाज देता है)

प्रगति जी, फेसबुक पर इतने सारे सपोर्ट मिले रहे है, दीदी के लिए क्या बताऊँ. **क्रमशः**

(पूरा उपन्यास एक साथ पढ़ने के लिए सम्पर्क करेंः मो0ः 9335155949)

लघु कथाएं

केले के छिलके

बैताल ने सम्राट विक्रमादित्य को दिल्ली में हुई एक घटना सुनाना प्रारम्भ किया. बैताल बोला-हे राजन, दिल्ली की सड़क पर एक पढ़ा लिखा व्यक्ति केले खाता हुआ आगे बढ़ रहा था. वह केले छीलकर खाता और छिलके सड़क पर फेंक देता. उसके पीछे एक अपंग व्यक्ति अपनी ट्राई साईकिल पर जा रहा था. आगे वाला व्यक्ति केला छीलकर खाता और छिलके सड़क पर फेंक देता किन्तु उसके पीछे वाला अपंग व्यक्ति केले के उन छिलकों को उठाता और अपनी जेब में रख लेता. यह क्रम काफी देर तक चलता रहा. आगे आगे चलने वाला वह पढ़ा लिखा व्यक्ति पीछे मुड़कर यह सब देख लेता था किन्तु जब उस अपंग व्यक्ति द्वारा केले के छिलके उठाना बन्द नहीं हुआ तो वह पढ़ा लिखा व्यक्ति कुछ गुस्सा होते हुए खड़ा हो गया और उस अपंग से बोला-

बैताल ने सम्राट विक्रमादित्य से पूछा कि हे राजन वह पढ़ा लिखा व्यक्ति उस अपंग से क्या बोला और उस अपंग ने उसे क्या जवाब दिया, इसका सही सही विवरण दीजिए अन्यथा परिणाम आप जानते हैं.

सम्राट विक्रमादित्य ने कहा-हे बैताल, वह पढ़ा लिखा व्यक्ति उस अपंग से बोला कि अरे मूर्ख तू ये छिलके क्यों समेट रहा है, यदि तुझे अधिक भूख लगी है और तुझे केले खाना है तो मैं तुझे एकाध दर्जन केले देता हूं, तू खा ले, किन्तु तू यह कचरा मत उठा. यह सुनकर वह अपंग व्यक्ति बड़ी नम्रता से उस पढ़े लिखे व्यक्ति से बोला- साब, मुझे न तो भूख ही लगी है और न हि मैं ये केले के छिलके खाने के लिए बीन रहा हूं. आपके द्वारा फेंके गये केलो के छिलके बीन कर जेब में रखने की कोई और वजह है. उस व्यक्ति ने वजह पूछी तब उस अपंग ने कहा कि साब मैं भी आपकी तरह दोनों पैरों से भला चंगा था किन्तु आपके जैसे किसी व्यक्ति द्वारा सड़क पर फेंके गये छिलकों पर फिसलकर गिरने के कारण मैं अपनी दोनों टांगे गवां बैठा. जैसे मैं अपनी दोनों टांगों से अपाहिज हो गया कहीं ऐसा न हो कि आपके द्वारा फेंके गये केलों के छिलकों से फिसलकर कोई अन्य व्यक्ति अपाहिज न हो जाये. इसीलिए मैं आपके द्वारा सड़क पर फेंके गये केले के छिलके उठा उठा कर अपनी जेब में रख रहा हूं. एकत्र किये गये इन छिलकों को मैं आगे किसी कूड़ेदान में फेंक दूगा. यह सुनकर वह पढ़ा लिख व्यक्ति अवाक् हो गया. लज्जित होते हुए उसने अपनी भूल स्वीकार की और आगे ऐसी गलती न करने का आश्वासन देकर आगे बढ़ गया.

सम्राट विक्रमादित्य का यह जवाब सुनकर बैताल पुनः पेड़ पर जा लटका.

-आचार्य शिवप्रसादसिंह राजभर
''राजगुरु'', जबलपुर म.प्र.

अबार्शन

बेचारी प्रियंका को उसकी सासु व उसका पति उस दिन से टॉर्चर कर रहे थे, जबसे पता चला है कि उसके गर्भ में पल रहा भ्रूण एक लड़की है. उस पर हर दिन-हर वक्त बस एक ही दवाब दिया जा रहा था...'अर्बाशन' करा ले, हमें लड़की नहीं, लड़का चाहिए.

प्रियंका ने भी कसम खा ली थी कि मर जायेगी पर अपनी बेटी को हर हाल में ये दुनिया दिखायेगी, इसीलिए बस वह चुपचाप अपनी सासु और पति के अत्याचार सह रही थी.

एक दिन तो प्रियंका की सास ने अत्याचार की सारी हदें पार कर दी..
..

अब प्रियंका से चुप न रहा गया, उसने राते-चिल्लाते कह ही दिया. 'अगर आपकी मां ने भी अपना 'अर्बाशन' कराया होता है तो क्या आज आप यहां मुझे पीट रही होती....क्या आपके इस बेटे का अस्तित्व होता...?

इतना सुनते ही मानों दोनों मां-बेटे को लकवा मार गया.....

-मुकेश कुमार ऋषि वर्मा,
आगरा, उ.प्र.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान** द्वारा 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

40 वर्ष से ऊपर के लिएः डॉ. कलाम सम्मान, डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

20 से 40 वर्ष के लिएः काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान (विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए), स्वामी विवेकानन्द सम्मान, पवहारी शरण द्विवेदी सम्मान (समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखीय योगदान के लिए) निर्भया सम्मान-(महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किए गये कार्य के लिए) कहानीकार /व्यंग्यकार/कवि/ग़ज़लकार/उपन्यासकार सम्मान(हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में कार्य के लिए कम से कम 64 पृष्ठीय पाण्डुलिपि या कृति), पत्रकार रत्न, पत्रकारश्री, कलाश्री(पत्रकारिता, संगीत, नाटक, पेंटिग, नृत्य आदि के क्षेत्र में उत्कृष्ठ योगदान के लिए), समाज शिरोमणि, समाज रत्न, समाजश्री (समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य के लिए)

20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः पं. नेहरु सम्मान(देश हित व समाज सेवा), चन्द्रावती देवी सम्मान(हिन्दी व साहित्य सेवा), गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान(समाज सेवा), बचपना सम्मान (किसी भी क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए)

सभी आयु वर्ग के लिएः

हिन्दी सेवियों के लिएः विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान (विदेशी/हिन्दीतर भाषी नागरिक-किसी भी विधा की रचना)**, राष्ट्रभाषा सम्मान** (हिन्दीत्तर भाषी राज्यों के हिन्दी प्रेमियों के लिए जो हिन्दी का व्यापक प्रचार-प्रसार व लेखन कार्य कर रहे है)**, राजभाषा सम्मान**-(सरकारी/अर्द्धसरकारी विभागों/उपक्रमों में कार्यरत राजभाषा अधिकारियों द्वारा हिन्दी के विकास के लिए). **शिक्षकश्रीः** (शिक्षा के क्षेत्र में योगदान के लिए), **विधिश्री**-(विधि के क्षेत्र में रहते हुए हिन्दी सेवा के लिए)

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में-उपाधियांः कहानी रत्न, काव्य रत्न, काव्य श्री, काव्य शिरोमणि, दोहा श्री, ग़ज़ल श्री (उपाधियां प्रकाशित/अप्रकाशित कम से कम 100 पृष्ठीय कृति पर ही प्रदान की जायेगी जो वर्ष 2011 के बाद प्रकाशित हो या लिखी गई हो.) समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी. लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं. इनके लिए कम से कम 100 पृष्ठों की किसी एक विषय पर लिखि पाण्डुलिपि जो 2014 के बाद लिखी गई हो, प्रकाशित/अप्रकाशित हो, पर दिया जाएगा. प्रत्येक के लिए दो हिन्दी साहित्य सेवी प्रस्तावक का होना आवश्यक है.

विशेषः 1. उपाधियों के लिए चयन त्रिस्तरीय निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. प्रत्येक प्रविष्टि के साथ सम्पूर्ण प्रमाणिक विवरण तीन प्रतियों में तथा साथ में एक टिकट लगा जवाबी लिफाफा, सचित्र स्वविवरणीका और 200/ रुपये मात्र का धनादेश/ बैंक ड्राफ्ट/मल्टी सिटी चेक अथवा **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** की किसी भी शाखा से **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'** के नाम से **खाता संख्याः 538702010009259** में जमा कर, जमा पर्ची की छाया प्रति आवेदन के साथ संलग्न कर भेजना अनिवार्य होगा. 2. किसी भी दशा में रचनाएं व सहयोग राशि लौटाई नहीं जाएँगी. 3.रचनाओं के साथ मौलिकता को दर्शाना अनिवार्य होगा. सम्मान डाक से प्रेषित नहीं किया जाएगा. किसी प्रकार के विवाद के संबंध में न्यायिक क्षेत्र इलाहाबाद होगा.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए सम्पर्क करें या देखेः

अंतिम तिथिः 30 अक्टूबर 2017

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११, ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com, www.visvhindisansthan.org